



सीआरपीएफ समाचार

वर्ष 61

अंक-5

जुलाई-अगस्त, 2015



राजभाषा विशेषांक



76वें स्थापना दिवस के अवसर पर श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार परेड का निरीक्षण करते हुए।



76वें स्थापना दिवस के अवसर पर श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार परेड की सलामी लेते हुए।



चीफ पेड्रन: श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक

संपादकीय सलाहकार मण्डल

अध्यक्ष: श्री के. दुर्गा प्रसाद, विशेष महानिदेशक
(परिचालन व कार्य)

सदस्य: श्री आर.पी. सिंह, महानिरीक्षक (कार्मिक),
श्री जुल्फिकार हसन, महानिरीक्षक (परिचालन),
श्री एम.पी.एस. नेगी, निदेशक, सीआरपीएफ
अकादमी, श्री आर.के. मिश्रा, महानिरीक्षक (संभरण),
श्रीमती अनुपम कुलश्रेष्ठ, उप महानिरीक्षक
(प्रशासन), श्रीमती ऐनी एब्राहम, उप महानिरीक्षक
(आसूचना), ब्रिगेडियर अरुण बाली, उप महानिरीक्षक
(प्रशिक्षण)

सीआरपीएफ समाचार एक द्विमासिक पत्रिका है।
इसमें प्रकाशित किये जाने वाले विचार लेखकों
के व्यक्तिगत विचार हैं। विभाग की नीति से
इसका कोई संबंध नहीं है।

—मुख्य संपादक

मुख्य संपादक: श्री भुवन चन्द्र खंडूरी

संपादक: सत्येन्द्र सिंह

चित्र: जनसंपर्क फोटो सेल, महानिदेशालय
और सीआरपीएफ यूनिट्स

संपादकीय कार्यालय: महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व
पुलिस, बल ब्लॉक-1, केन्द्रीय कार्यालय
परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003,
दूरभाष: 24360649

**महानिदेशक सीआरपीएफ की ओर से मुद्रित
और प्रकाशित:** इण्डिया ऑफसेट प्रेस, ए-1,
मायापुरी फेस-1, नई दिल्ली-110064

आवरण पृष्ठ का शीर्षक:—

76वें स्थापना दिवस के अवसर पर श्री प्रकाश मिश्र,
महानिदेशक, केरिपुबल श्री राजनाथ सिंह माननीय गृह
मंत्री भारत सरकार को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए।

इस अंक में

महानिदेशक का राजभाषा संदेश	— 2
स्व. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को केरिपुबल की श्रद्धांजलि	— 3-5
स्थापना दिवस	
केरिपुबल ने अपनी जन्म स्थली नीमच में मनाया 76वां स्थापना दिवस	— 6-17
पदक अलंकरण	
स्वतंत्रता दिवस 2015 के अवसर पर केरिपुबल ने जीता एक शौर्य और 64 वीरता के पदक	— 18-22
विशिष्ट सेवाओं एवं सहारानीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक	— 22-24
पासिंग आउट परेड	
90 सीधे भर्ती राजपत्रित अधिकारी केरिपुबल में हुए शामिल	— 25-27
लेख / कविता	
सहायक निदेशक (राजभाषा) की कलम से	— 28
केरिपुबल में राजभाषा का कार्यान्वयन	— 29-30
विश्व हिन्दी सम्मेलन	— 31-32
हे मानव तू क्यों सोता है?	— 32
राजभाषा हिन्दी की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान	— 33
एटीकेट्स	— 34
भारतीय संविधान में राजभाषा हिन्दी की स्थिति	— 35
राजभाषा हिन्दी का बढ़ता हुआ कद	— 36
सशक्त अभिव्यक्ति की भाषा हिन्दी	— 37
हिन्दी तुझे सलाम	— 38-39
हे ईश्वर वह दिन कब आयेगा	— 39
महानिदेशक के दौरे	— 40
महानिदेशालय के कार्यक्रम	— 41-43
विविध समाचार	— 44-46
उपलब्धियाँ	— 47
अधिकारियों का विवरण	— 48

महानिदेशक का राजभाषा संदेश

विविधता में एकता की विशिष्टता वाले इस विशाल राष्ट्र को एक सूत्र में बांधे रखने में भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं के साथ-साथ हिंदी की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यही कारण है, कि, यह सारे देश में संपर्क भाषा के रूप में कार्य कर रही है। भारतीय संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसलिए, प्रति वर्ष 14 सितंबर “हिंदी दिवस” के रूप में मनाया जाता है। आज हिंदी आम बोलचाल की भाषा बन गई है और रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, विज्ञापनों, चलचित्रों, एवं व्यावसायिक जगत में अत्यन्त लोकप्रिय हो चुकी है।



आज वैश्वीकृत और उदारीकृत अर्थव्यवस्था ने भाषाओं का महत्व उजागर कर दिया है। हिंदी भी विश्व की कुछ प्रमुख भाषाओं में से एक है, इसलिए भारत को जानने-समझने वालों के अलावा आज व्यापार और वाणिज्य क्षेत्र के लोग भी हिंदी सीख रहे हैं। ऐसे दौर में हमारे लिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें। इससे हम सभी लाभान्वित होंगे।

केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों से सकारात्मक परिणाम मिले हैं। राजभाषा विभाग द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में किए गए प्रयासों से अब कंप्यूटरों पर हिंदी में कार्य करना अधिक सुविधाजनक एवं सरल हो गया है। इसके लिए समय-समय पर आवश्यक निर्देश भी जारी किए गए हैं। इसी क्रम में राजभाषा विभाग ने वेब आधारित सूचना प्रबंधन प्रणाली विकसित की है। अतः यह सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है कि सभी कंप्यूटर उपकरणों में हिंदी में काम करने की सुविधा हो। केरिपुबल द्वारा अन्य उपायों के अलावा हिंदी में मूल पत्राचार को बढ़ावा देने के लिए कई पुरस्कार योजनाएं भी चलाई जा रही हैं। जिनमें अधिक से अधिक कर्मचारियों द्वारा भागीदारी करके शासकीय कार्य में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु अपना सक्रिय योगदान देना अपेक्षित है।

विगत में, संसदीय राजभाषा समिति द्वारा हमारे कुछ कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने के लिए निरीक्षण किया गया था। समिति ने उन सभी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की स्थिति को सराहनीय पाया है। अतः भविष्य में भी हमारी यह कोशिश होनी चाहिए कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग के बारे में गृह मंत्रालय द्वारा जारी आदेशों एवं अनुदेशों का हम पूर्णतः पालन करें।

मैं सभी कार्यालय प्रमुखों से अनुरोध करता हूं कि वे अपने कार्यालयों में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत रुचि लें, और स्वयं हिंदी में कार्य करके अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें। संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन है, किंतु संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी प्रकार दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है।

आइए, हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हम सभी उत्साहपूर्वक और गर्व के साथ अपना कार्य हिंदी में करेंगे और राजभाषा अधिनियम, नियम एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों और राजभाषा संबंधी प्रावधानों का अनुपालन करेंगे। मुझे विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हम अपना लक्ष्य प्राप्त करने में अवश्य सफल होंगे और राजभाषा के रूप में हिंदी का गौरव बढ़ाएंगे।

शुभकामनाओं सहित।

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: सितम्बर, 2015

प्रकाश मिश्र
(प्रकाश मिश्र)
महानिदेशक, केरिपुबल



स्व. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को केरिपुबल की श्रद्धांजलि

संक्षिप्त जीवनी

‘डॉ.’ अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 ई. को भारत के तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम में हुआ था। इनका पूरा नाम डा. अबुल पकीर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम है। इनके पिता श्री जैनुलाबदीन मध्यमवर्गीय परिवार से थे। डॉ. कलाम ने अपने पिता से ईमानदारी और आत्मानुशासन की विरासत पाई और माता से ईश्वर-विश्वास तथा करुणा का उपहार लिया।



डॉ. कलाम ने 1950 में तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज से बी. एस. सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में उपाधि प्राप्त की। 1958 में वे डी. टी. डी. एंड पी. के तकनीकी केंद्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक के पद पर नियुक्त हुए। 1963 से 1982 तक कलाम ने अंतरिक्ष अनुसंधान समिति में विभिन्न पदों पर काम किया। 1981 के स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर डा. कलाम

को ‘पद्म भूषण’ से सम्मानित किया गया। भारत सरकार द्वारा 1990 में इन्हें ‘पद्म विभूषण’ और 1997 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ‘भारत रत्न’ से सम्मानित किया गया। 25 जुलाई 2002 को डा. कलाम ने भारत के राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। वे ‘मिसाइल मैन’ के नाम से प्रसिद्ध हैं।

शिलोंग, मेघालय में हृदयाघात होने से डॉ. कलाम का देहान्त हो गया। वे भारतीय प्रबन्ध संस्थान में

एक लैक्चर दे रहे थे कि अचानक बेहोश हो गए। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम का अन्तिम संस्कार पूरे सैन्य सम्मान के साथ किया गया। वे जाने-माने वैज्ञानिक के साथ-साथ गंभीर चिंतक और अच्छे इंसान भी थे। बाल-शिक्षा में विशेष रुचि रखने वाले डॉ. कलाम को वीणा बजाने का भी शौक था। राजनीति से दूर रहकर भी कलाम राजनीति के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान रहे।

**“सपना वह नहीं जो आप नींद में देखते हैं
यह तो एक ऐसी चीज है
जो आपको नींद ही नहीं आने देती!”**

- डॉ. कलाम



केरिपुबल में डॉ. कलाम वार्षिक परेड में मुख्य अतिथि

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम 29 अक्टूबर, 2005 को झड़ोदा कलां में आयोजित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 66वीं वार्षिक परेड के मुख्य

अतिथि थे। परेड को सम्बोधित करते हुए डॉ. कलाम ने कहा कि जनता के प्रति मानवीयता और सहानुभूति, के.रि.पु.बल की कार्यशैली की विशिष्टता है। उन्होंने कहा कि इस भव्य और प्रेरणादायक समारोह में उपस्थित होने

पर वे अपने को सम्मानित महसूस कर रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. कलाम ने सी.आर.पी.एफ. कार्मिकों को निम्नलिखित शपथ दिलाई :-

- मुझे के.रि.पु.बल का सदस्य होने पर गर्व है।
- मैं राष्ट्र की सुरक्षा के लिए पूरी वचनबद्धता तथा समर्पण के साथ कार्य करूँगा।
- मैं एक सहायता करने वाला नागरिक हूँगा और जरूरत के समय अपने देशवासियों की सहायता करूँगा।
- मैं अपने देश तथा देशवासियों की हर सफलता को मनाऊँगा।
- मेरा झण्डा ही मेरी जिन्दगी है।



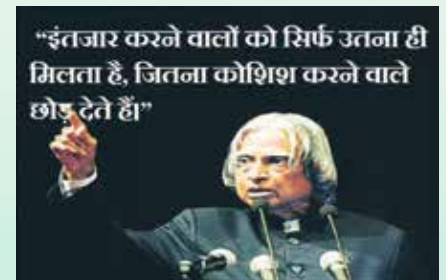
तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. कलाम परेड का निरीक्षण करते हुए।



डॉ. ए.पी.जे. कलाम परेड की सलामी लेते हुए।



तत्कालीन गृह मंत्री एवं केरिपुबल के अधिकारियों के साथ डॉ. ए.पी.जे. कलाम।



“इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।”



केरिपुबल पब्लिक स्कूल द्वारका में आगमन

बच्चों से असीम स्नेह रखने वाले प्रेमी डॉ. अब्दुल कलाम ने दिनांक 19.09.2014 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पब्लिक स्कूल, द्वारका का दौरा किया था, जिसकी कुछ झलकियां प्रस्तुत हैं।



तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. कलाम दीप प्रज्जलित करते हुए।



स्कूली बच्चों के साथ तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. कलाम।



तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. कलाम बच्चों से मेंटिंग प्राप्त करते हुए।



केरिपुबल ने अपनी जन्मस्थली नीमच में मनाया 76वां स्थापना दिवस

शानदार परेड का आयोजन

विश्व के सबसे बड़े अर्द्धसैनिक बल, के. रि.पु.बल ने दिनांक 27.07.2015 को नीमच ग्रुप केन्द्र में अपना 76वां स्थापना दिवस भव्यपूर्ण तरीके से मनाया। केरिपुबल की स्थापना 27 जुलाई 1939 को नीमच में हुई थी। इस अवसर श्री राजनाथ सिंह, माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री मुख्य अतिथि थे। श्री शिवराज सिंह चौहान, माननीय मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश इस समारोह में विशिष्ट अतिथि थे। श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक, केरिपुबल ने गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया।

महिला, द्रुत कार्य बल, कोबरा और प्रशिक्षण के अलावा चारों जोन की एक-एक टुकड़ी को मिलाकर कुल आठ टुकड़ियों ने परेड में हिस्सा लिया। श्री सूरजपाल वर्मा ने इस परेड का नेतृत्व किया। साहसी महिला कर्मियों ने मोटरसाइकिलों पर शानदार सन्तुलन और हैरत अंगेज कारनामों से दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया। कराटे की टीम के अलावा मल्लखम्भ पर सीआरपीएफ के कर्मियों ने अद्भूत संतुलन, दक्षता और निपुणता का प्रदर्शन किया।

गृह मंत्री ने शहीद शौनक कुमार दास, सहायक कमान्डेंट-177 बटालियन की पत्नी को शौर्य के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्रदान किया। शहीद दास छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में उस समय शहीद



केरिपुबल के झंडे को श्री राजनाथ सिंह गृह मंत्री भारत सरकार द्वारा सलामी।

हो गए थे जब उन्होंने जून, 2013 को खलारी के जंगलों में बहुत अंदर स्थित माओवादी के ठिकाने पर छापा मारा और गंभीर रूप से घायल एवं अपंग होने के बावजूद अकेले ही दो सशस्त्र माओवादियों को मार गिराया।

गृह मंत्री ने एम.जी. राव, महानिरीक्षक, श्री एस.एन. साबत, महानिरीक्षक, श्री एम.के. सिन्हा, महानिरीक्षक, श्री अजित कुलश्रेष्ठ, महानिरीक्षक (अपर महानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त), श्री एस. बी. काजल, महानिरीक्षक, श्री जे. राजेन्द्रन, कमान्डेंट, श्री जी.टी.0 लेमचा, उप कमान्डेंट, निरीक्षक जंगशेर सिंह और हवलदार/चालक के.के. जया कुमार को भी विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्रदान किया।

वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्र, पूर्वोत्तर क्षेत्र और जम्मू व कश्मीर क्षेत्र में सर्वोत्तम परिचालनिक बटालियनों के लिए ट्रॉफी क्रमशः 94, 156 और 185 बटालियन को प्रदान की गई। ग्रुप केन्द्र जालंधर ने लगातार दूसरी बार सर्वोत्तम ग्रुप केन्द्र की ट्रॉफी अर्जित की। सीटीसी कोयम्बटूर सर्वोत्तम प्रशिक्षण संस्थान की ट्रॉफी, 100 बिस्तर कम्पोजिट अस्पताल नई दिल्ली एवं 50 बिस्तर कम्पोजिट अस्पताल, नीमच को सर्वोत्तम अस्पताल की ट्रॉफी एवं ग्रुप केन्द्र बनतालाब को सर्वोत्तम कम्प्यूटर सैवी की ट्रॉफी प्रदान की गई।

श्री के. दुर्गा प्रसाद, विशेष महानिदेशक, केरिपुबल ने सभी का धन्यवाद किया।



स्थापना दिवस के अवसर पर महानिदेशक का संदेश

आदरणीय श्री राजनाथ सिंह जी, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार, माननीय श्री शिवराज जी चौहान, माननीय मुख्यमंत्री, मध्य-प्रदेश, सम्मानित अतिथिगण, मीडिया के प्रतिनिधिगण, देवीयों सज्जनों, प्यारे बच्चों एवं नीमच के समस्त नागरिकगण।



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 76वें स्थापना दिवस के अवसर पर मैं आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। आज का दिन विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन सन् 1939 में इसी स्थान पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की स्थापना हुई थी। यह अत्यंत गौरव का विषय है कि एक बटालियन से शुरू होकर आज यह बल 235 बटालियनों के साथ विश्व का सबसे बड़ा सशस्त्र पुलिस बल है। बल की उन्नति एवं उपलब्धियों में नीमच एवं नीमचवासियों का विशेष योगदान रहा है।

आज माननीय गृह मंत्री जी ने अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद इस शुभ अवसर पर उपस्थित होकर हमें अनुग्रहित किया है, इसके लिए हम उनके आभारी हैं। साथ ही मैं माननीय मुख्यमंत्री जी मध्य-प्रदेश का भी उनकी गरिमामय उपस्थिति के लिए विशेष आभार व्यक्त करता हूँ।

महोदय, केरिपुबल आंतरिक सुरक्षा एवं कानून-व्यवस्था कायम रखने में हमेशा अग्रणी रहा है। कर्तव्य की बलिवेदी पर हमारे वीरों ने अब तक 2000 से अधिक कुर्बानियाँ दी हैं। हम बल के सभी वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके बलिदान को नमन करते हैं।

वर्ष 2001 में बल को आंतरिक सुरक्षा के लिए मुख्य फोर्स का दायित्व दिया गया। बल ने पूर्वोत्तर राज्यों का विद्रोह, जम्मू-कश्मीर तथा पंजाब के आतंकवाद और मध्य भारत के नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्रों में हर जगह डटकर राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला करते हुए अपनी असाधारण परिचालन क्षमता का परिचय दिया है। इस वर्ष अब तक बल ने 85 खूंखार आतंकवादियों एवं नक्सलवादियों को मार गिराया तथा 1100 से अधिक को पकड़ने में सफलता हासिल की है। परिचालन अभियानों के दौरान भारी मात्रा में आधुनिक हथियारों, गोला-बारूद और विस्फोटक सामग्री भी बरामद की। हमारे बहादुर जवानों ने अनेकों दुर्गम क्षेत्रों जैसे- छत्तीसगढ़ के बस्तर और अबूझमाड़ तथा झारखण्ड के बूढ़ापहाड़ और सारंडा में कई कैम्प स्थापित किए हैं। साथ ही साथ दुर्गम क्षेत्रों में सड़क निर्माण कार्यों में सुरक्षा प्रदान भी की है जिससे स्थानीय जनता में सुरक्षा का भाव पैदा हुआ है।

इस बल ने देश की सरहदों पर भी जरूरत के समय कठिन परिस्थितियों में अपनी सेवाएं दी हैं। 21 अक्टूबर 1959 को हॉट स्प्रिंग में केरिपुबल के जवानों ने पहले चीनी आक्रमण का बहादुरी के साथ मुकाबला किया था। 1965 के कच्छ के रण में सरदार पोस्ट पर एक पूरी पाकिस्तानी ब्रिगेड के हमले को बल की मात्र दो कम्पनियों ने वीरतापूर्वक विफल किया था। इस वर्ष देश उस विजय की 50वीं वर्षगांठ मना रहा है।



महोदय, वर्तमान में हमारा बल राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वाह कर रहा है, जिनमें पूर्वोत्तर, जम्मू-कश्मीर एवं मध्य भारत में आतंकवाद एवं नक्सलवाद विरोधी अभियानों के साथ-साथ साम्प्रदायिक हिंसा के खिलाफ कार्रवाई, मणिपुर और नागालैण्ड की लाईफ लाईन समझे जाने वाले राजमार्ग की सुरक्षा, लेह, जम्मू-श्रीनगर, और आईजॉल के अतिसंवेदनशील हवाई अड्डों की सुरक्षा, जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग की सुरक्षा, अयोध्या, काशी, मथुरा और वैष्णोदेवी जैसे अतिसंवेदनशील धार्मिक स्थलों की सुरक्षा, श्री अमरनाथ जी यात्रा की सुरक्षा, शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष चुनाव का निष्पादन, प्राकृतिक आपदा के समय राहत कार्य, संसद की सुरक्षा एवं वीआईपी सुरक्षा आदि शामिल हैं। बदलती भूमिकाओं में अभ्यस्त होने की योग्यता तथा हर चुनौती को स्वीकार करने की अदभुत क्षमता ने बल को आंतरिक सुरक्षा के लिए अत्यधिक भरोसेमंद व लोकप्रिय बनाया है। आज विभिन्न राज्यों में कानून व्यवस्था की स्थिति बिगड़ने पर केरिपुबल की ही मांग की जाती है जो हमारे लिए गर्व की बात है।

वीरता और कर्तव्य परायणता तथा हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन केरिपुबल की परम्परा है। केरिपुबल के बहादुर जवानों ने वीरता के 1200 से अधिक पदक अर्जित किए हैं, जिनमें जार्ज क्रॉस अशोक चक्र, कीर्ति चक्र, वीर चक्र, शौर्य चक्र आदि भी शामिल हैं। खेल के क्षेत्र में बल के सदस्यों ने राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार एवं अर्जुन अवार्ड अर्जित किए हैं।

महोदय, बल के कार्मिकों के कल्याण के सम्बन्ध में कुछ प्रस्ताव जैसे ड्यूटी के दौरान जोखिम भत्ता के साथ डिटैचमेंट भत्ता का भुगतान, अवकाश के दौरान जोखिम भत्ता की कटौती न करना, कार्मिकों को परिवार रखने के लिए मकान या सभी जवानों को मकान किराया भत्ता लागू करना, बल के जवानों और अधिकारियों को पदोन्नति के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने हेतु कॉडर समीक्षा आदि मुख्य हैं। मैं महोदय से अनुरोध करना चाहूंगा कि इन पर यथाशीघ्र सकारात्मक निर्णय लेकर जवानों के मनोबल को ऊँचा करने की कृपा करें। महोदय, आपका केरिपुबल के प्रति विशेष लगाव इसी बात से जाहिर होता है कि आपने अति संवेदनशील क्षेत्रों में केरिपुबल की कठिनतम पोस्टों जैसे छत्तीसगढ़ में चिन्तागुफा और झारखण्ड में सारंडा का विजिट कर जवानों का मनोबल बढ़ाया जिससे उनमें नई स्फूर्ति का संचार हुआ है।

महोदय, मैं बल की ओर से आश्वासन दिलाना चाहता हूँ कि हम देश सेवा में और अधिक कटिबद्धता से समर्पित रहेंगे और अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण निष्ठा के साथ निभाएंगे तथा देश की एकता एवं अखण्डता पर कभी कोई आंच नहीं आने देंगे।

केरिपुबल के सभी अधिकारियों एवं जवानों के दिल में यह भावना होती है कि वे अपनी सेवाकाल के दौरान कम से कम एक बार केरिपुबल की जन्मस्थली नीमच जरूर जायें। यह एक तरह से केरिपुबल के लिए तीर्थ-स्थल की तरह है। नीमच में विभिन्न संस्थान जैसे प्रथम बटालियन, गुप केन्द्र, सीटीसी, आरटीसी और सिग्नल बटालियन आदि होने से केरिपुबल के जवानों को किसी ना किसी रूप में नीमच आने का अवसर मिलता ही है। नीमचवासी भी केरिपुबल के जवानों का दिल से स्वागत करते हैं, जिसके लिए मैं समस्त नीमचवासियों को धन्यवाद देता हूँ और उनका आभार व्यक्त करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि नीमचवासियों का यह प्यार और स्नेह सदैव केरिपुबल को मिलता रहेगा। यह सर्वविदित है कि केरिपुबल और नीमच का एक विशिष्ट रिश्ता है जो हमेशा बना रहेगा।

मैं पुनः माननीय गृह मंत्री महोदय का आभार करता हूँ कि उन्होंने अपनी उपस्थिति से इस समारोह की शोभा बढ़ाई।

जय हिन्द!



स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी चौहान, सीआरपीएफ के डायरेक्टर जनरल श्री प्रकाश जी मिश्र, सांसद श्री पुनीत जी गुप्ता और यहाँ उपस्थित सभी सम्माननीय नागरिकों और बहादुर अधिकारियों और मेरे बहादुर जवानों। सीआरपीएफ के जवानों ने जो यहाँ परेड की है इसके लिए रेटिंग की जायेगी तो कोई भी कहेगा कि एक्सिलेंट ही नहीं बल्कि सुपर एक्सिलेंट है। जन-जन के मन में आपने अपने प्रति एक भरोसा और विश्वास पैदा करने में कामयाबी हासिल की है, इसलिए मैं आपको बधाई देना चाहता हूँ। चाहे कहीं पर कोई दंगा हो जाये, फसाद हो जाये, चुनाव हों, कहीं आग लग जाये, किसी प्रकार की कोई प्राकृतिक आपदा आ जाये, संसद के ऊपर हमला क्यों न हो जाये, सबसे पहले यदि याद किया जाता है तो हमारे सीआरपीएफ के जवानों को याद किया जाता है और सम्मान एवं अदब से हमारे सीआरपीएफ के अधिकारियों और जवानों को ये हिन्दुस्तान की जनता देखती है।



आपने दो बटालियन के साथ अपनी यात्रा प्रारम्भ की और आज हिन्दुस्तान में 236 बटालियन की फोर्स के रूप में इस देश में खड़े हैं और अगर मैं ये कहूँ कि केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में सबसे बड़ी पैरामिलेट्री फोर्स का नाम क्या है तो समझ लो कि उस फोर्स का नाम है सीआरपीएफ (सेन्ट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स)। आप ने अपने काम से भरोसा पैदा किया है। देश की जनता भूल नहीं सकती है कि लद्दाख के हॉट स्पिंग में किस प्रकार का करिश्मा आपने किया है, जबकि आप की स्थापना के कुछ ही वर्ष हुए थे। हॉट स्पिंग में चीनी सेना की पल्टन ने सीआरपीएफ के जवानों के ऊपर घात लगाकर हमला किया था तो अपने प्राणों की आहुति देकर उनकी मंशा को विफल करने का काम यदि किसी ने किया था तो मेरे जवानों आप जैसे ही सीआरपीएफ के जवानों ने किया था, 21 अक्टूबर, 1959 को। तब से बराबर 21 अक्टूबर पुलिस स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है।

कैसे हम भूल सकते हैं कि 1965 में रन ऑफ कच्छ में 09 अप्रैल को ऑटोमेटिक वेपन्स से लैस पाकिस्तान की बटालियन ने सीआरपीएफ जवानों की एक छोटी सी टुकड़ी पर हमला कर दिया। हमारा हौसला उस समय भी पस्त नहीं हुआ था, जबकि आप की संख्या केवल साढ़े तीन सौ-चार सौ की थी और उनकी संख्या साढ़े तीन हजार की थी, लेकिन आपने अपना मनोबल टूटने नहीं दिया था। 6 सीआरपीएफ के जवानों ने अपना बलिदान दिया था लेकिन 34 पाकिस्तानी जवानों को मार गिराने में आपने कामयाबी हासिल की थी। उसी सरदार पोस्ट पर यह करिश्माई काम करने वालों की जमात के एक व्यक्ति श्री भवानी दत्त शर्मा को मैंने सम्मानित किया है और उन्हें सम्मान देकर मैं स्वयं को सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। मुझे श्री भवानी दत्त शर्मा से मिलकर बेहद खुशी हुई और मैं यदि कहूँ लोकतन्त्र के मन्दिर का यदि कोई रक्षक है, उस बल का नाम क्या है, तो मैं कहूँगा कि उस बल का नाम है सीआरपीएफ।

वैसे सीआरपीएफ फोर्स ही नहीं बल्कि सभी पैरा मिलेट्री फोर्स को और बेहतर बनाने के लिए और अधिक कारगर बनाने के लिए अपनी तरफ से पूरी ताकत लगाकर मैं कोशिश कर रहा हूँ। गृहमन्त्री के रूप में जिम्मेदारी संभालने के बाद मैंने कहा कि एक्शन और ऑपरेशन में जो हमारा जवान घायल होता है और यदि हॉस्पिटल में भर्ती होता है



तो ऑफ ड्यूटी नहीं माना जायेगा बल्कि वह ऑन ड्यूटी माना जायेगा और इसे लागू किया जा चुका है। सिपाहियों को प्रमोट कर हेड कांस्टेबिल बना दिया गया है यह पहली बार यह हुआ है। डिटेचमेंट एलाउन्स के नाम रिस्क और हार्डशिप एलाउंसेंज दिये जाने का प्रस्ताव भी 7वें पे कमीशन के समक्ष भेजा जा चुका है।

हमने कुछ फाइनेंसियल पावर डायरेक्टर जनरल पुलिस को देने का काम किया है। निर्माण कार्यों के लिए पहले जो 5 करोड़ रुपया था उसे बढ़ाकर 10 करोड़ रुपया कर दिया गया है और साथ ही अन्य के लिए जो 8 करोड़ हुआ करता था उसे बढ़ाकर 20 करोड़ रुपए कर दिया गया है और 2015-16 वित्तीय वर्ष के लिए 564 करोड़ रुपए डायरेक्टर जनरल अपने अधिकारों के तहत खर्च कर सकते हैं। साथ ही हाउसिंग की सुविधा और अधिक कैसे बढ़ाई जाये, एचआरए की सुविधा कैसे और अधिक बढ़ाई जाये इसके लिए भी हम लोग अभी से प्रयत्न कर रहे हैं।

माओवादी क्षेत्रों में हमारे सीआरपीएफ के जवान अपनी जिंदगी को हथेली पर लेकर माओवादियों से हर वक्त लड़ते रहते हैं। विगत वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष हमारे सीआरपीएफ के जवानों ने माओवाद घटनाओं में 30 फीसदी की गिरावट लाने में कामयाबी हासिल की है। कितने उग्रवादियों को विगत एक वर्ष में आपने मार गिराया उसकी जानकारी भी सीआरपीएफ डायरेक्टर जनरल श्री प्रकाश मिश्रा ने आपको दी-85 आदमी 1143 आतंकवादियों और उग्रवादियों को आपने गिरफ्तार किया है। 759 आधुनिक हथियार भी आपने बरामद किये हैं और एक्सप्लोसिव भी आपने बरामद किये।

डायरेक्टर जनरल सीआरपीएफ श्री प्रकाश मिश्रा से मैंने कहा जहाँ पर हमारा सीआरपीएफ का जवान रहता है उन स्थानों पर मैं स्वयं जाना चाहूँगा। परोक्ष रूप से हमारे बहुत सारे मित्रों और सहयोगियों ने मुझसे कहा, बहुत कठिन है, बहुत जोखिम भरा है, वहाँ आपको नहीं जाना चाहिए। मैंने कहा यदि हमारा सीआरपीएफ का जवान अपनी जिन्दगी हथेली पर लेकर ऐसे दुर्गम क्षेत्रों में अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहा है तो यह गृह मंत्री के रूप में मेरी जिम्मेदारी बनती है कि मैं जाऊँ और उस स्थान पर जाकर मैं अपने सीआरपीएफ के जवानों से सीधा संवाद स्थापित करूँ। मेरे जवानों मैंने वहाँ भी जाने का काम किया और मैंने देखा कि जहाँ भी आप रहते हैं जनता का दिल आप जीतते हैं और मैं यही अपेक्षा करता हूँ कि जहाँ-जहाँ जाइये वहाँ जनता का दिल जीतने में कामयाबी हासिल कीजिए और अराजक तत्वों के हौसलों को पस्त करने में कामयाबी हासिल कीजिए।

इस फोर्स को हम और अधिक ओर्गेनाइज करना चाहते हैं, आधुनिक बनाना चाहते हैं, नई टेक्नोलॉजी का प्रयोग कैसे अधिकतम किया जा सकता है, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट और कैसे बढ़ सकता है, उसको भी करने की कोशिश कर रहे हैं।

चाहे हमारे देश की सेना के जवान हों, चाहे हमारे पैरामिलेट्री फोर्स के जवान हों, उनके साहस पर, उनके शौर्य पर, पराक्रम पर, हमें पूरा भरोसा है। मैं कहना चाहता हूँ अपने पड़ोसी देश से कि हम आपके साथ अच्छे रिश्ते चाहते हैं, लेकिन राष्ट्रीय स्वाभिमान की कीमत पर नहीं। पहले भारत की सेना, पैरामिलेट्री फोर्सेज के जवान किसी के ऊपर गोली नहीं चलाना चाहते हैं, लेकिन गोली उनके द्वारा चलाई गई तो उसका मुंहतोड़ जवाब देने में भी हमारी सेना और पैरामिलेट्री फोर्सेज के जवान किसी भी सूरत पर पीछे नहीं हटेंगे।

मेरे जवानों, आज के इस अवसर पर ज्यादा कुछ न कहते हुए मैं एक बार पुनः आपके साहस, आपके शौर्य, आपके पराक्रम का अभिनन्दन करता हूँ और पुनः आप सबको 76वें स्थापना दिवस के अवसर पर बधाई देता हूँ।



76वां स्थापना दिवस



श्री राजनाथ सिंह गृह मंत्री भारत सरकार शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए।



श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश सरकार शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए।



मंच पर आसीन श्री राजनाथ सिंह गृह मंत्री भारत सरकार, साथ में श्री शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश सरकार।



श्री राजनाथ सिंह गृह मंत्री भारत सरकार शहीद स्मारक स्थल पर श्रद्धांजलि देते हुए।



श्री राजनाथ सिंह गृह मंत्री भारत सरकार परेड का निरीक्षण करते हुए।



76वें स्थापना दिवस परेड की झलकियाँ





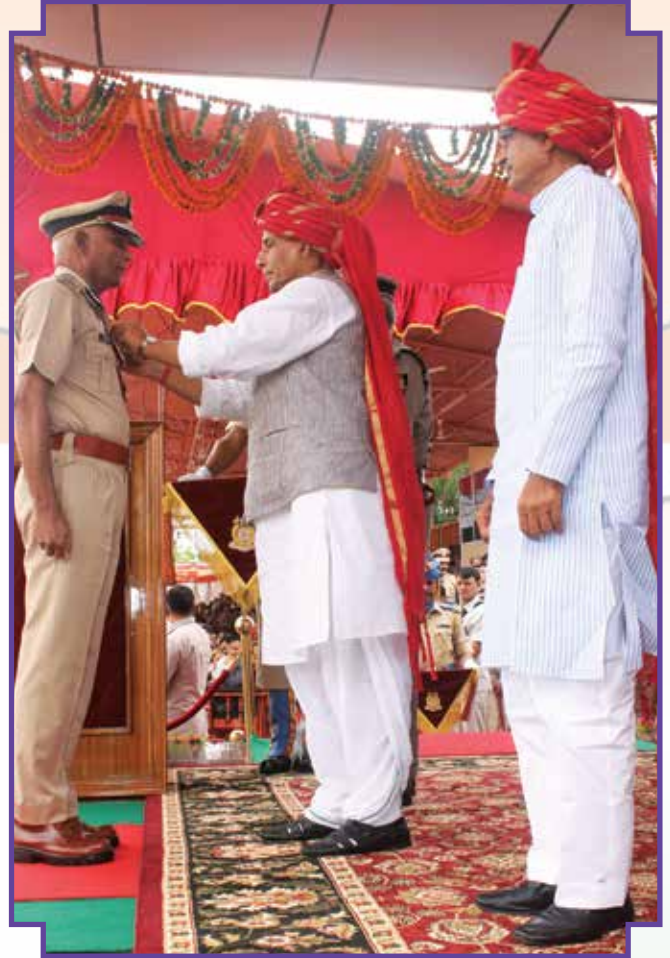
76वें स्थापना दिवस परेड की झलकियाँ



पदक एवं ट्रॉफी वितरण



स्व. श्री सौनक कुमार, सहा. कमा. की पत्नी श्री राजनाथ सिंह से राष्ट्रपति का वीरता पुलिस पदक प्राप्त करती हुई।



श्री राजनाथ सिंह गृह मंत्री भारत सरकार से विशिष्ट सेवा के लिए पदक प्राप्त करते हुए श्री सुरजभान, महानिरीक्षक, पश्चिमोत्तर सेक्टर।



श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृह मंत्री भारत सरकार, श्री अजय भरतन पुउमनि, सीटीसी, कोयम्बटूर को सर्वोत्तम प्रशिक्षण केन्द्र का ट्रॉफी प्रदान करते हुए।



श्री राजनाथ सिंह गृह मंत्री भारत सरकार से सर्वोत्तम गुप सेन्टर ट्रॉफी प्राप्त करते हुए श्री सुनील थोर्पे डीआईजीपी जलन्धर।



अदभुत करतब प्रदर्शन





स्थापना दिवस के अवसर पर कॉफी टेबल पुस्तक का विमोचन



उपस्थित गणमान्य अतिथिगण





स्थापना दिवस के अवसर पर बड़ा खाना



स्थापना दिवस के अवसर पर साँस्कृतिक कार्यक्रम





स्वतंत्रता दिवस 2015 के अवसर पर केरिपुबल ने जीता एक शौर्य और 64 वीरता के पदक

स्वतंत्रता दिवस – 2014 के अवसर पर 71 वीरता पदक अर्जित करके केरिपुबल बल ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि आन्तरिक सुरक्षा के मामलों से निपटने के लिए क्यों केरिपुबल की सबसे अधिक मांग की जाती है। इस बल को वर्ष – 2015 के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एक शौर्य चक्र और वीरता हेतु 64 पुलिस पदक (इनमें से दो को मरणोपरान्त) प्रदान करके सम्मानित किया गया है। कलेंडर वर्ष-2015 के दौरान गणतंत्र दिवस 2015 को मिलाकर केरिपुबल द्वारा अर्जित वीरता पदकों की कुल संख्या 101 हो गई जो एक अनूठा कीर्तिमान है। वामपंथी उग्रवाद प्रभावित राज्यों में माओवादी खतरे और जम्मू कश्मीर में आतंकवाद तथा पूर्वोत्तर में नस्ली विद्रोह से निपटने में यह बल सबसे अग्रणी रहा है।

विगत वर्षों के दौरान इस बल की पूर्वोत्तर में विद्रोह, पंजाब और जम्मू कश्मीर में आतंकवाद तथा वामपंथी उग्रवाद प्रभावित राज्यों में माओवादियों से निपटने में मुख्य भूमिका रही है। वर्तमान में यह बल भारी संख्या में वामपंथी उग्रवाद से निपटने के लिए समर्पित है जो कि आन्तरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा है। इस ज्वलंत समस्या की गंभीरता इस बात से आंकी जा सकती है, कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने स्वयं इसे देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिए मुख्य खतरा बताया है।

वर्तमान में 10 वामपंथी उग्रवाद प्रभावित राज्यों में केरिपुबल की 77 जनरल ड्यूटी बटालियनें और 09 कोबरा बटालियनें तैनात हैं। इस प्रमुख आन्तरिक सुरक्षा खतरे से गहनता से निपटने के लिए केरिपुबल ही एकमात्र सुरक्षा बल है। इन राज्यों में तैनाती की शुरुआत में इस बल को माओवादियों से निपटने में कुछ परेशानियाँ

झेलनी पड़ीं, क्योंकि माओवादी स्थानीय निवासी होने और क्षेत्र की जानकारी का लाभ उठाने की स्थिति में थे, लेकिन बाद में इस बल ने नयी शक्ति और ऊर्जा के साथ इनका मुकाबला किया। मध्य भारत अर्थात् नेपाल में पशुपति से आन्ध्र प्रदेश में तिरुपति तक लाल कॉरिडोर स्थापित करने के माओवादियों के सपने को चकनाचूर कर दिया और आज वे छत्तीसगढ़, झारखण्ड और बिहार के एक छोटे हिस्से तक सीमित हो गए हैं। केरिपुबल का प्रभुत्व इतना बढ़ गया है कि माओवादियों ने अपनी गतिविधियों का कार्य क्षेत्र बढ़ाने के

बजाए इसे अपने मुख्य क्षेत्रों तक और नेतृत्व की रक्षा करने तक सीमित कर दिया है।

इस प्रभुत्व को पाने के लिए केरिपुबल के बहादुर अधिकारियों और जवानों को काफी कड़े प्रयास करने पड़े और यहां तक कि उन्हें अपनी जान की बाजी भी लगानी

शौर्य चक्र विजेता अमर शहीद श्री हीरा कुमार झा, द्वि.क.अ. 7वीं बटालियन (मरणोपरान्त)

शहीद श्री हीरा कुमार झा, द्वितीय कमान अधिकारी को उनके अद्वितीय शौर्य, उत्कृष्ट साहस, असीम निष्ठा और कर्तव्य के प्रति निष्काम समर्पण भावना प्रदर्शित करने के लिए मरणोपरान्त शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया है। उन्होंने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह नहीं करते हुए दिनांक 03/07/2014 को बिहार और झारखण्ड की अन्तर्राज्यीय सीमा के जिला जमुई (बिहार) के थाना खैरा के अन्तर्गत गांव लखारी में एक वरिष्ठ माओवादी कमाण्डर को गिरफ्तार करने के लिए चलाये गए ऑपरेशन के दौरान अपनी टुकड़ियों का नेतृत्व किया और यह सुनिश्चित किया कि उनके दल को अधिक नुकसान ना हो। इसके लिए उन्होंने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान कर दिया।





पड़ी है। इस थियेटर में अभी तक हमारे 566 पराक्रमी अधिकारियों और जवानों ने अपने जीवन का बलिदान दिया है। मध्य भारत के घने जंगलों में माओवादियों के सुव्यवस्थित और सुरक्षित शिविरों में सुरक्षा बलों द्वारा छापेमारी के दौरान घमासान युद्ध लड़े गए।

यह सब केरिपुबल के बहादुर जवानों के पराक्रमी योगदान से संभव हो पाया, जिसके फलस्वरूप इसने "प्रजातंत्र का संरक्षक" की उपाधि अर्जित की है और इसके प्रयासों और शौर्य की प्रशंसा किसी अन्य ने नहीं बल्कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने स्वयं की है। एक अवसर पर 65 वीरता पदक और एक वर्ष के दौरान कुल 101 वीरता पदक प्राप्त करना, केरिपुबल द्वारा उसे सौंपे गए दायित्वों के निर्वहन करने की क्षमता को दर्शाता है। केरिपुबल ने अपने इतिहास के दौरान इससे पूर्व ऐसी उल्लेखनीय कामयाबी अर्जित नहीं की थी। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रदान किए वीरता पदकों में से 47 पदक वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों में अदम्य शौर्य प्रदर्शित करने के लिए प्रदान किए गए हैं, जबकि पूर्वोत्तर और जम्मू-कश्मीर में सेवा के लिए क्रमशः 12 और 06 पदक प्रदान किए गए हैं। इनमें से 22 पदक बल के बहादुर अधिकारियों को बल की टुकड़ियों का नेतृत्व करते हुए बल की उच्च परम्पराओं के निर्वहन के लिए प्रदान किए गए हैं।

इस अवसर पर भी कोबरा कमाण्डो वीरता पदक अर्जित करने में आगे रहे हैं। उन्होंने कुल 28 वीरता पदक अर्जित किए हैं। 210 कोबरा बटालियन ने फिर से यह सिद्ध किया है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में केरिपुबल के बाद इसकी सबसे अधिक मांग है। इस बटालियन को 09 वीरता पदकों से अलंकृत किया गया है। वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में 7वीं बटालियन ने यह साबित किया

है, कि किस प्रकार आसूचना जानकारी हासिल करके सर्जिकल ऑपरेशन संचालित किए जाते हैं और इस यूनिट ने 11 वीरता पदक अर्जित किए हैं।



शहीद श्री परवाल परीमल,
निरीक्षक/जीडी

शहीद निरीक्षक परवाल परिमल को उनके अदम्य शौर्य, विपरीत परिस्थिति में उत्कृष्ट साहस, असीम कर्तव्य निष्ठा, पूर्ण समर्पण भावना प्रदर्शित करने के लिए मरणोपरांत वीरता के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है।

उन्होंने झारखण्ड में सुरक्षा बलों के लिए लगाए गए एम्बुश में माओवादियों का डटकर सामना किया और गंभीर रूप से जखमी होने के बावजूद भी उन्होंने अपनी सैन्य टुकड़ियों को संगठित करके रखा और जबावी कार्रवाई करके माओवादियों को अपने सुरक्षित ठिकानों से अपने घायल साथियों के साथ भागने के लिए विवश कर दिया।

इस बल ने आज तक 1,499 पदक अर्जित किए हैं जिनमें 01 जॉर्ज क्रॉस, 03 किंग्स पीएमजी, 01 अशोक चक्र, 01 कीर्ति चक्र, 01 पद्म श्री, 01 वीर चक्र, 13 शौर्य चक्र, 49 पीपीएफएसएमजी, 189 पीपीएमजी, 01 युद्ध सेवा पदक, 05 सेना पदक, 04 विशिष्ट सेवा पदक, 1,124 पीएमजी, 105 आईएमजी, 03 जीवन रक्षा पदक और जीवन रक्षा के लिए 98 प्रधानमंत्री पुलिस पदक शामिल हैं।

शहीदों को सलाम

दिनांक 18/08/2015 को छत्तीसगढ़ में खोजी अभियान के दौरान नक्सलियों ने 168 बटालियन के दस्ते पर हमला कर दिया जिसमें शहीद सि./जीडी सुनिल राम घायल हो गए एवं घायल अवस्था में लड़ते-लड़ते अपने प्राणों की आहुति दे दी। केरिपुबल

शहीद सि/जीडी सुनिल राम को नम आंखों से याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता है।





वीरता के लिए पुलिस पदक विजेता



सि./जीडी उत्तम कुमार धुर्वे,
201 कोबरा



सि./जीडी नरेन्द्र कुमार,
209 कोबरा



सि./जीडी तनमय भौमिक,
204 कोबरा



उ.नि./जीडी जसवन्त सिंह,
185 बटा.



निरी./जीडी मो. अशफाक खान,
185 बटा.



सि./जीडी प्रवीण कुमार सेनी
185 बटा.



श्री राजन सिंह, उप कमा.
210 कोबरा



सि./जीडी बबलू कुमार,
210 कोबरा



सि./जीडी प्रशांत लक्ष्मण
210 कोबरा



श्री सुरेश कुमार, सहा. कमा.
120 बटालियन



सि./जीडी के. वेंकटाचलम,
120 बटा.



सि./जीडी खोत सागर
रामचन्द्र, 120 बटा.



श्री रीनचेन वांगयाल दावा,
कमाण्डेंट, 201 कोबरा



श्री धर्मपाल, सहा. कमा.
201 कोबरा



सि./जीडी प्रवीण कुमार,
201 कोबरा



सि./जीडी विकास सादोत्तरा,
170 बटालियन



सि./जीडी चमचम कुमार,
170 बटा.



श्री हरमीन्दर सिंह, कमाण्डेंट
203 कोबरा



सि./जीडी भूदेव सिंह,
203 कोबरा



श्री अमीत शर्मा, उप कमा.
210 कोबरा



श्री कुलदीप सिंह दहिया,
सहा. कमा., 210 कोबरा



श्री अमरेन्द्र तिवारी, सहा. कमा.
210 कोबरा



उप नि./जीडी अरविन्द
दादोरीआ, 210 कोबरा



हव./जीडी श्री हरीश कुमार,
210 कोबरा



सि./जीडी सन्तोष कुमार पाण्डे,
210 कोबरा



वीरता के लिए पुलिस पदक विजेता



श्री पंकज मिश्रा, उप कमा.
84 बटा.



सि./जीडी मुकेश कुमार सिंह,
94 बटा.



श्री अरुण कुमार सिंह, उप
कमा., 218 बटा.



सडनि./जीडी गीरेन्द्र सिंह
तोमर, 82 बटा.



श्री संजय कुमार, उप कमा.
203 कोबरा



श्री मनोज कुमार यादव,
सहा. कमा., 203 कोबरा



श्री दिलीप कुमार सिंह,
सहा. कमा., 133 बटा.



सि./जीडी सबीर अहमद पोरे,
133 बटा.



उप नि. जीडी महेश बन्द मीना,
203 कोबरा



सि./जीडी दिप्ति रंजन
बीसवाल, 203 कोबरा



श्री अलोक पनवार, सहा. कमा.
150 बटा.



सि./जीडी रवीन्द्र कुमार,
150 बटा.



सि./जीडी जतन लाल,
150 बटा.



सि./जीडी गुरु प्रसाद के.एन.,
150 बटा.



सि./जीडी मुकेश कुमार
गुरजार, 150 बटा.



सि./जीडी विजय सिंह राठौर,
150 बटा.



श्री बृजेन्द्र कुमार मिश्रा,
उप कमा., 208 कोबरा



सि./जीडी जय कुमार तिवारी,
208 कोबरा



सि./जीडी अमीत जमवाल,
208 कोबरा



सि./जीडी बोर्स दीपक सुरेश,
208 कोबरा



सि./जीडी फील्डस कुमार,
208 कोबरा



श्री अंजनी कुमार, सहा. कमा.
204 कोबरा



सि./जीडी धननजय दास,
204 कोबरा



श्री अजीत कुमार, सहा. कमा.
7 बटा.



सि./जीडी श्रीकान्त पाण्डे,
7 बटा.



वीरता के लिए पुलिस पदक विजेता



श्री सुनील कुमार शर्मा, सहा
कमा., 94 बटा.



श्री रंजीत मडल, सहा. कमा.,
94 बटा



सि./जीडी गुलाब सिंह,
94 बटा.



श्री सुरेश कुमार यादव,
उप कमा. 7 बटा.



सि./जीडी संदीप कुमार,
7 बटा.



सि./जीडी बलवन्त सिंह,
7 बटा.



सि./जीडी बचन सिंह,



उनि./जी.डी. सुभाष चन्द्र राय,
7 बटा.



उनि./जी.डी. हरीकिशन,
7 बटा.



सि./जीडी हेमन कलीटा
185 बटा.



सउनि./जी.डी. रेवन्ना
सिद्धापा के., 185 बटा.



सि./जीडी मनोज राम,
185 बटा.

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



श्री नलिन प्रभात, भा.पु.से.
म.नि.परि. श्रीनगर सेक्टर मुख्यालय



श्री हरप्रीत सिंह सिधू, भा.पु.से. म.नि.
कोबरा सेक्टर मुख्यालय



श्री शैलेन्द्र कुमार,
म.नि. संचार महानिदेशालय



श्री इन्द्र सिंह, कमांडेंट
55वीं बटालियन



उ.नि./जीडी(महिला) कल्पना शाह
213 (महिला) बटालियन



सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक से सम्मानित

क्र.सं.	ईरला/बल सं.	पदनाम	अधिकारी का नाम / श्री	कार्यालय / वाहिनी
1	2844	पु.उ.म.नि.	संदीप गोकल	जम्मू सेक्टर मुख्यालय
2	3385	पु.उ.म.नि.	केवल सिंह	गु.के. गोहाटी
3	3412	पु.उ.म.नि.	अजय कुमार वशिष्ठ	परि. जोराहट सेक्टर मुख्यालय
4	3381	पु.उ.म.नि.	एम.जे. विजय	कोबरा सेक्टर मुख्यालय
5	10123	पु.उ.म.नि.	संजय ए. लेथकर, भा.पु.से.	रेंज मुख्यालय नागपुर
6	2634	मु.चि.अ.(एसजी)	डॉ. अशोक कुमार शुकुमरन	81 वाहिनी
7	3392	कमाण्डेंट	पुखराज जयपाल	49 वाहिनी
8	3401	कमाण्डेंट	रामोप्यांग डूईडेंग	143 वाहिनी
9	3393	कमाण्डेंट	सानन्द कमल	179 वाहिनी
10	3354	कमाण्डेंट	एम. दिनकरन	गु.के. आबड़ी
11	4838	द्वि.क.अधि.	सुरेश कुमार यादव	पु.उ.म.नि.(परि.) अवन्तिपोरा
12	4773	द्वि.क.अधि.	समरेन्द्र नाथ मण्डल	167 वाहिनी
13	4858	द्वि.क.अधि.	भरत कुमार वैष्णव	162 वाहिनी
14	4852	द्वि.क.अधि.	राम निवास शेखु	70 वाहिनी
15	4834	द्वि.क.अधि.	दिनेश	166 वाहिनी
16	4814	द्वि.क.अधि.	हेमन्त कुमार साहू	147 वाहिनी
17	4770	द्वि.क.अधि.	कल्याण सिंघा	पु.उ.म.नि.(परि.) बोईगांग
18	4865	द्वि.क.अधि.	पी.सी. चौहान	27 वाहिनी
19	4233	द्वि.क.अधि.	एन. कुंजारानी देवी	186 वाहिनी
20	5878	उप कमाण्डेंट	शक्ति सिंह	164 वाहिनी
21	6384	उप कमाण्डेंट	प्रशान्त कुमार मिश्रा	189 वाहिनी
22	771310407	निरी/जीडी	तोरन सिंह	गु.के. रायपुर
23	800674163	निरी/जीडी	नेत्रपाल सिंह	सीटीसी-कोयम्बतूर
24	790100146	निरी/जीडी	चन्द्र कान्त बाबू स्वांत	191 वाहिनी
25	821261372	निरी/जीडी	उपेन्द्र कुमार मोदी	04 वाहिनी
26	800030013	निरी/जीडी	हरिश राम	21 वाहिनी



27	800470015	निरी / जीडी	रोहताश सिंह	25 वाहिनी
28	821320992	निरी / जीडी	सुभाष चन्द्र	218 वाहिनी
29	801180145	निरी / जीडी	बदरुल हसन खान	गु.के. गांधीनगर
30	821290612	निरी / जीडी	मदन सिंह	11 वाहिनी
31	811270404	निरी / जीडी	उदय सिंह	आरटीसी-जोधपुर
32	830755249	उनि / जीडी	राम कुँवर	69 वाहिनी
33	802010092	उनि / जीडी	रमेश राम	40 वाहिनी
34	830290371	उनि / जीडी	राजेन्द्र सिंह	रेंज मुख्यालय, रांची
35	830747434	उनि / जीडी	उत्पल मण्डल	184 वाहिनी
36	830737233	उनि / जीडी	देशवीर सिंह	छत्तीसगढ़ सेक्टर मुख्यालय
37	831191447	उनि / जीडी	प्रेम सिंह राजपुरोहित	104 आर.ए.एफ. वाहिनी
38	830757475	सउनि / जीडी	ओम प्रकाश नौटियाल	54 वाहिनी
39	850791917	हव / जीडी	मौ. अय्युब	163 वाहिनी
40	860885274	उनि / जीडी (महि.)	श्रीमति गीता देवी	सीटीसी-नीमच
41	860886752	सि / जीडी (महि.)	श्रीमति सेरेला सरानिया	232(महि.) वाहिनी
42	801280194	निरी / टी.	गजेन्द्र सिंह	5 बेतार वाहिनी
43	801180154	निरी / आर्मो.	मुनेश कुमार	सीडब्ल्यूएस-3, सिलीगुड़ी
44	821130614	उनि / आर्मो.	महादेव मंग	गु.के. बंगलुरु
45	810480031	हव / बड़ाई	सतबीर सिंह	89 वाहिनी
46	830100019	हव / चालक	गोपी चन्द	छत्तीसगढ़ सेक्टर मुख्यालय
47	810650033	सि / रसोईया	हरीश चन्द्र मिश्रा	34 वाहिनी
48	801271881	सि / स.कर्म.	तिगराम सिकेमणी	30 वाहिनी
49	88132086	सि / ज.वा.	दिनेश जोशी	आरटीसी-जोधपुर
50	7742	सहा.कमा.	एम. रामदोस	105 आर.ए.एफ. वाहिनी
51	9835	सहा.कमा. / मं.	सिरोश कुमार ए.आर.	गु.के.-तरालु
52	8763	सहा.कमा. / मं.	मिदिचिरला वेंकेटा सुब्रमण्यम	गु.के.-रंगारेड्डी

बुराई से असहयोग करना मानव का पवित्र कर्तव्य है

—महात्मा गाँधी



90 सीधे भर्ती राजपत्रित अधिकारी केरिपुबल में हुए शामिल भव्य परेड का आयोजन

एक भव्य एवं शानदार दीक्षांत समारोह में सी.आर.पी.एफ. अकादमी गुड़गांव से दिनांक 26.08.2005 को 46वें बैच के 90 अधिकारी, जिनमें 07 महिला अधिकारी भी शामिल हैं, पास आउट होकर देश सेवा में समर्पित हुए। श्री प्रकाश मिश्रा, भा.पु.से., महानिदेशक, सी.आर.पी.एफ. ने मुख्य अतिथि के रूप में परेड की सलामी ली।



इस दौरान विभिन्न प्रशिक्षण प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठता प्राप्त करने वाले उत्कृष्ट प्रशिक्षुओं को सम्मानित किया गया। इसमें सर्वोत्तम प्रशिक्षु श्री राज आर्यन, सहा. कमां. को सम्मान के रूप में तलवार व होम मिनिस्टर कप प्रदान किया गया जबकि आंतरिक विषयों में निपुणता के लिए सुश्री मनु तिवारी, सहा.कमां., बाह्य विषयों के लिए श्री सिवि सूदन, सहा. कमां. व चोंदमारी के लिए श्री सुखपाल सिंह, सहा. कमां. को ट्राफी दी गई। युद्ध कला में महारत हासिल करने के लिए श्री नवीस कुमार, सहा. कमां. और सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में श्री सुखपाल सिंह, सहा. कमां. को ट्राफी प्रदान की गई। इनके अलावा 24 अधिकारियों और जवानों को सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक प्रदान किए गए। इस अवसर पर बल के विशेष महानिदेशक श्री के. दुर्गा प्रसाद,

भा.पु.से. और अकादमी के निदेशक श्री एम.पी.एस. नेगी के अलावा सी.आर.पी.एफ. के वरिष्ठ अधिकारी, जवान, पासआउट अधिकारियों के परिजन और अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

इस बैच के 90 अधिकारी देश के 18 राज्यों व भारत संघ शासित प्रदेशों से इस अखिल भारत रूपी के.रि.पु.बल में शामिल हुए हैं, जिनमें से अधिकतम उत्तर प्रदेश से हैं। ये अधिकारी बल की विभिन्न बटालियनों में तैनात किए जायेंगे जहां वे सीखी गई बातों को मूर्त रूप देंगे तथा वास्तविकता से परिचित होंगे।

इस अवसर पर के.रि.पु.बल के महानिदेशक श्री प्रकाश मिश्रा ने कहा कि यह बल मुख्यतः नक्सल प्रभावित क्षेत्रों, जम्मू-कश्मीर व उत्तर पूर्व

राज्यों में तैनात है जहां वह अच्छा कार्य कर रहा है। सी.आर.पी.एफ. के जवानों की बहादुरी के कारण नक्सल क्षेत्रों में पिछले एक साल में बहुत सुधार आया है एवं अगर जवान इसी तरह अपने कर्तव्यों का पालन करते रहे तो नक्सलवाद की समस्या जल्द ही खत्म हो जायेगी। कठिन तैनाती के बारे में सी.आर.पी.एफ. के महानिदेशक ने कहा कि यह एक अवसर है जब हम अपना शौर्य एवं पराक्रम दिखाकर देश की सेवा कर सकते हैं और साथ ही पदक भी हासिल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस वर्ष के.रि.पु.बल को 100 से ज्यादा वीरता के पदक मिले हैं और मुझे विश्वास है कि आप अगले वर्ष और अधिक पदक जीतकर के.रि.पु.बल का नाम रोशन करेंगे।

श्री राज आर्यन सहा. कमा. तलवार से सम्मानित

46वें बैच के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी श्री राज आर्यन को उनके सभी तरह के उत्कृष्ट प्रशिक्षण प्रदर्शन के लिए महानिदेशक महोदय ने तलवार भेंट कर सम्मानित किया। इनका जन्म 30/11/1989 को ग्राम-हनुमान नगर जिला-मुजफ्फरपुर में हुआ। इनकी माता का नाम श्रीमती शशीकला कुमारी एवं पिता का नाम अवधेश प्रसाद ठाकुर है। वे स्नातक (तकनीकी) शिक्षा प्राप्त कर दिनांक 03/06/2014 को सीधे सहायक कमान्डेंट के पद पर भर्ती हुए। खेल-कूद और फोटोग्राफी में इनकी विशेष रुचि है। इन्होंने सभी तरह के प्रशिक्षण में सर्वोत्तम प्रशिक्षण के लिए ट्रॉफी भी प्राप्त की।



महानिदेशक, श्री राज आर्यन, सहा. कमा., को सर्वोत्तम प्रशिक्षु के लिए तलवार भेंट करते हुए ।



महानिदेशक से आंतरिक विषयों में निपुणता के लिए ट्रॉफी प्राप्त करती हुई सुश्री मनु तिवारी ।



महानिदेशक से सर्वोत्तम खिलाड़ी/चौदमारी एवं शारीरिक प्रशिक्षण के लिए ट्रॉफी प्राप्त करते हुए श्री सुखपाल सिंह, सहा.कमां. ।



युद्धकला में महारत हासिल करने के लिए महानिदेशक से ट्रॉफी प्राप्त करते श्री नवीस कुमार, सहा.कमां. ।



महानिदेशक से श्री एम.ए. मधुसुदन, सहा.कमा., सर्वोत्तम ड्रिल की ट्रॉफी प्राप्त करते हुए ।



महानिदेशक से सर्वोत्तम इन्डुरेन्स (आयरन मैन) की ट्रॉफी प्राप्त करते हुए श्री किशन विक्रमजीत सिंह सहा. कमा. ।



महानिदेशक से सर्वोत्तम बाह्य विषयों के लिए ट्रॉफी करते हुए श्री सि.वि. सुदन, सहा.कमां. ।



प्रशिक्षु अधिकारी झंडे के सामने प्रतिज्ञा लेते हुए।



महानिदेशक एवं उच्च अधिकारियों के साथ प्रशिक्षु अधिकारी।



सहायक निदेशक (राजभाषा) की कलम से

सु.मे./हिंदी, महिपाल सिंह रावत
महानिदेशालय, हिंदी शाखा

“भाषा देश की एकता एवं अखंडता का पर्याय और बहता नीर है”

भाषा व्यक्ति और समाज का अभिन्न अंग हुआ करती है। इस नाते इसका संबंध देश के अतीत, वर्तमान और भविष्य से रहता है। भाषा संस्कृति और लोगों को आपस में जोड़ने का माध्यम है। हवा के प्रवाह और गति को कोई रोक नहीं सकता और यदि मैदान खुला हो, किसी प्रकार का प्रदूषण न हो, तो हवा की ताजगी मन और तन दोनों का स्वस्थ करती है। भाषा भी उसी तरह हृदयागत भावों को अभिव्यक्ति का रूप देकर ताजगी उत्पन्न करती है। प्रत्येक स्वतंत्र देश की अपनी एक भाषा होती है। यह भाषा उसकी स्वतंत्रता, एकता और स्थायित्व के लिए आवश्यक होती है। इस संदर्भ में हमें भारतेन्दु द्वारा रचित कविता का स्मरण हो जाता है — “निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।”

भारतीय भाषाओं और साहित्य के संदर्भ में संस्कृत की भूमिका अहम और विस्तृत है। वह सब भाषाओं की जननी है। भारत में भाषायी दृष्टिकोण से विभिन्नता पाई जाती है जो कि स्वाभाविक है। देश के विभिन्न भागों में अनेक भाषाएं और उप भाषाएं बोली जाती हैं। यहां बोली जाने वाली भाषा को दो वर्गों में बांटा गया है — भारतीय आर्यों की भाषाएं तथा द्रविड़ भाषाएं। प्राचीन भारतीय साहित्य इन दो भाषाई समूहों में लिखा गया है। भारतीय आर्य भाषाएं उत्तर भारत में बोली जाती थी, जबकि द्रविड़ भाषाएं दक्षिण में बोली जाती थीं। संस्कृत

भारतीय आर्यों की भाषा थी। इसे पाणिनी ने परिपक्वता प्रदान की। चौथी शताब्दी तक संस्कृत धर्म तथा चिन्तन की भाषा बन गई। तमिल द्रविड़ भाषाओं में सबसे प्राचीन है। दक्षिण की अन्य भाषाएं बाद में विकसित हुई हैं। हमारे संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएं सम्मिलित की गई हैं, जिनमें हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।

बहते हुए जल का कोई भी रूप उसमें मिल कर समरूप हो जाता है। लेकिन उसके लिए तीन शर्तें हैं — अभिव्यक्ति के लिए उस शब्द की आवश्यकता, वाक्य विशेष में यह शब्द खप जाए और थोड़ी कोशिश करने पर उसका अर्थ समझ में आ जाए। सामान्यतः सरल भाषा का प्रयोग हो, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर तत्सम शब्दों को भी निःसंकोच प्रयोग में लाया जाए। भाषा सरल, सहज, बोधगम्य तथा आम बोलचाल की होनी चाहिए, क्योंकि श्रोता-दर्शक अन्य भाषा-भाषी भी हो सकते हैं तथा पाठक भी सामान्य शिक्षित हो सकते हैं। भाषा विषयानुकूल हो। आवश्यकतानुसार हास्य-व्यंग के समावेश से भाषा में रोचकता बनी रहती है। विभिन्न प्रकार के व्यवधानों के बावजूद जैसे नदी का जल प्रवाहमय बना रहता है उसी प्रकार भाषा भी गतिशील बनी रहती है।

राष्ट्रभाषा हिंदी की भूमिका आज बहुत बड़ी हो गई है क्योंकि पुरातन काल में जैसे संस्कृत ज्ञान-विज्ञान की भाषा

थी वैसे ही आज हिंदी की स्थिति में भी वही समृद्धि होनी चाहिए थी। भाषा का यह वृहत्तर दायित्व है कि उसमें विभिन्न विषयों को समझने के लिए पाठ्य-सामग्री तैयार हो। हिंदी की आंचलिक बोलियां जैसे भोजपुरी, मगधी, अवधी, ब्रजभाषा पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, बंगला, असमिया आदि के शब्द उस भाषा रूपी नदी के ही अंग हैं, अतः उनका प्रयोग बेहिचक हो।

हिंदी की शब्द सम्पदा समृद्ध है। इसमें पर्यायवाची शब्दों का पर्याप्त भंडार है। कहीं न कहीं जनसामान्य द्वारा अपनाये जाने वाले सामान्य शब्द हैं। चारों दिशाओं से ग्रहण किए गए शब्द हैं। इस प्रकार यह दूसरी भाषाओं के शब्दों को समाहित करते हुए सुगम, सरल भाषा का रूप बन चुकी है। अब अधिकांश कार्य कंप्यूटरों पर सम्पन्न हो रहे हैं। इस नए परिदृश्य में समय के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रयोग की गति को बढ़ाना होगा।

अतः हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर आपसे अनुरोध है कि हम मन, वचन और कर्म से हिंदी को अपनाएं तथा सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग कर अपना संवैधानिक दायित्व पूरा करें। इस संदर्भ में यह याद रखें —

‘जिन्हें मंजिल पाना है, वे शिकवा नहीं करते !

जो शिकवों में उलझे हैं, वे कभी पहुँचा नहीं करते ! !



के.रि.पु.बल में राजभाषा का कार्यान्वयन

ओम प्रकाश शर्मा
सूबेदार मेजर (हिं. अनु.)

संसद द्वारा दिनांक 18 जनवरी 1968 को पारित संकल्प के उपबंधों के अनुसार राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा केन्द्र सरकार के कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के केन्द्रों / उपक्रमों द्वारा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा हिंदी के प्रचार और प्रगामी प्रयोग के लिए प्रतिवर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है। राजभाषा कार्यान्वयन हेतु देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को वहां पर हिंदी बोले जाने और लिखे जाने की प्रधानता और उनकी भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए तीन क्षेत्रों क, ख, ग में वर्गीकृत किया गया है। इसी के आधार पर वार्षिक कार्यक्रम में प्रत्येक क्षेत्र के लिए विभिन्न लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं।

केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों द्वारा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के संबंध में वर्ष के अंत में एक वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट अपने-अपने मुख्यालय/मंत्रालय को प्रेषित की जाती है। सभी मंत्रालयों द्वारा उपरोक्त रिपोर्ट संकलित करके राजभाषा विभाग को भेजी जाती है। राजभाषा विभाग द्वारा सभी मंत्रालयों से प्राप्त रिपोर्ट / आंकड़ों का समेकन करके एक समेकित रिपोर्ट तैयार की जाती है और इसे संसद के दोनों सदनों के पटल पर रखा जाता है।

जहां तक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का प्रश्न है सरकारी कामकाज में अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में प्रगति हुई है, किन्तु उच्च कार्यालयों द्वारा अभी भी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित कुछ लक्ष्य प्राप्त नहीं किए जा सके हैं। जिसके लिए सभी स्तरों पर समग्र प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। महानिदेशालय के हिंदी अनुभाग द्वारा बल स्तर पर हिंदी भाषा, हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण के लिए शेष बल कर्मचारियों को प्रशिक्षित कराने हेतु एक समयबद्ध योजना के तहत

कार्रवाई की जा रही है ताकि प्रशिक्षण प्राप्त करके कर्मचारी अपना अधिकतम कार्यालयीन कार्य हिंदी में निष्पादित कर सकें। वर्ष 2011-12, 2012-13, 2013-14 के दौरान केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से निम्नलिखित विवरण के अनुसार बल के कर्मचारियों को हिंदी भाषा, हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि, कम्प्यूटर पर हिंदी प्रशिक्षण का प्रशिक्षण दिलाया गया है:-

	हिंदी भाषा	हिंदी टंकण	कम्प्यूटर पर हिंदी प्रशिक्षण (10 दिवसीय)	हिंदी आशुलिपि
वर्ष 2011-12	51	110	139	03
वर्ष 2012-13	35	216	40	03
वर्ष 2013-14	26	252	00	02
वर्ष 2011-12				

विशेष योग्यता के साथ प्रशिक्षण परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले कर्मचारियों को विद्यमान अनुदेशों के अनुसार प्रोत्साहन भी स्वीकृत किए गए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि प्रशिक्षित कराए गए कर्मचारियों की सेवाओं का बल के संबंधित कार्यालयों द्वारा नियमित रूप से कार्यालयीन कार्य में हिंदी के कार्य हेतु उपयोग सुनिश्चित किया जाए ताकि कर्मचारियों को दिलाए गये सेवाकालीन प्रशिक्षण की सार्थकता सिद्ध हो सके और शासकीय कार्यों में हिंदी के प्रयोग को भी बढ़ावा मिल सके।

बल स्तर पर राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने के लिए महानिदेशालय के हिंदी अनुभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य के अनुसार बल के अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया जाता है ताकि प्रत्यक्ष तौर पर अभिलेखों की जांच करके वास्तविक स्थिति का पता लगा सके। वर्ष



2015 के दौरान महानिदेशालय के राजभाषा संवर्ग से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा जून 2015 तक बल के 62 कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण किया गया है। जिनमें सिल्वर (असम) स्थित 5 कार्यालयों, छात्तीसगढ़ राज्य के रायपुर और जगदलपुर स्थित 8 कार्यालयों, त्रिवेन्द्रम (केरल) स्थित 4 कार्यालयों और श्रीनगर (जम्मू कश्मीर) स्थित 14 बटालियनों का राजभाषा निरीक्षण विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

राजभाषा निरीक्षण के दौरान संबंधित कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की वास्तविक स्थिति के साथ-साथ निरीक्षण के दौरान ध्यान में आई कमियों के निराकरण हेतु संबंधित कार्यालयों के प्रमुख का ध्यान आकृष्ट किया गया। इसमें कोई संदेह नहीं कि बल स्तर पर शासकीय कार्य में हिंदी के प्रयोग में वृद्धि हुई है, परन्तु वार्षिक कार्यक्रम के निर्धारित सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने और प्राप्त लक्ष्यों को बनाए रखने के लिए सभी स्तरों पर अभी और प्रयास किए जाने अपेक्षित हैं। विशेषकर महानिदेशालय, अंचल, सेक्टर मुख्यालयों और रेंज कार्यालयों के स्तर पर इस दिशा

में और अधिक कारगर और फलदायी प्रयास किए जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त राजभाषा से संबंधित विभिन्न आवधिक रिपोर्टों में वास्तविक आंकड़े दर्शाए जाएं। हिंदी के प्रयोग को सिर्फ चन्द अवसरों पर निभाई जाने वाली औपचारिकता की सोच को बदलने की आवश्यकता है। आश्चर्य तब होता है जब हिंदी भाषी क्षेत्र के कर्मचारियों को यह कहते हुए सुना जाता है कि उन्हें हिंदी नहीं आती है। जहां तक महानिदेशालय के हिंदी अनुभाग का संबंध है उसके स्तर पर सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं, जिनमें बल के जो कर्मचारी हिंदी भाषा और हिंदी टंकण के लिए शेष है उन्हें नियमित या पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षित कराना। विभिन्न मैनुअलों, सहायक सामग्री, स्थायी आदेशों और परिपत्र आदेशों का हिंदी अनुवाद उपलब्ध कराना और सरकार द्वारा राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु शुरू की गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का कार्यान्वयन सुनिश्चित करना विशेष रूप से उल्लेखनीय है।





विश्व हिंदी सम्मेलन

सू.मे./हि.अ. जितेन्द्र सिंह
गुप केन्द्र, करिपुबल, अमेठी।

हिंदी विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा है, जिसे सभी भाषा के भाषा वैज्ञानिकों ने माना है। ब्रिटिश शासनकाल में गवर्नर जनरल वारेन हैस्टिंग्स ने वाराणसी में हुई एक बैठक में कहा था कि “मुझे दुभाषिए की आवश्यकता नहीं है, मैं सीधी भाषा में अपनी बात कहूँगा।” आश्चर्य नहीं कि वारेन हैस्टिंग्स ने हिंदी भाषा सीखी और वह जब तक भारत में रहा, अपनी टूटी-फूटी हिंदी में ही बात करता था। अंग्रेजों ने हिंदी के स्वभाव को समझा था, लोगों के स्वभाव को जाना था। आज हिंदी हर स्तर पर शिक्षा का सशक्त माध्यम बनने की क्षमता रखती है। इस संदर्भ में गांधी जी ने 1910 में कहा था, “हिंदी में शिक्षा व्यवस्था का सवाल मेरे लिए देश की आजादी से कम महत्वपूर्ण नहीं है।”

चूंकि विश्व में भारत की पहचान का अर्थ है:- हिंदी की पहचान। हम भले ही भारत को हिंदी के रूप में न पहचाने, परन्तु सारी दुनिया भारत को हिंदी के रूप में ही पहचानती है। यह प्रखर संकेत हिंदी के वास्तविक ताकत की ओर है, हिंदी के मौलिक स्वभाव की ओर है।

यूँ तो हम सभी जानते हैं कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा भी है और राजभाषा

भी, परन्तु हिंदी का क्षेत्र इतना विस्तृत व विशाल है कि इसे केवल राष्ट्रभाषा और राजभाषा के दायरे में सीमित रखना उचित न होगा, बल्कि इसे तो विश्व-भाषा अर्थात् विश्व की सम्पर्क भाषा बनाना न्यायोचित होगा। हिंदी में विश्व भाषा बनने के सभी गुण मौजूद हैं और सदियों से भी हिंदी की महत्ता को सभी ने स्वीकारा भी है। स्टीफन स्पेंडर ने तो यहां तक कह दिया है- “हिन्दुस्तान के लोग अपनी इतनी समृद्ध भाषाओं के रहते हुए भी अंग्रेजी में रचना क्यों करते हैं, समझ में नहीं आता।” हिंदी एक सभ्य भाषा है, यह विचार भी है, संस्कार भी है और व्यक्ति के विवेक की पहचान भी है।

आज हिंदी विश्व भाषा बनने की दहलीज पर खड़ी है। भू-मण्डलीकरण और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के ‘MAKE IN INDIA’ और ‘SKILL INDIA’ के इस युग में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को भारत में व्यापार की असीमित संभावनाएं दिख रही हैं और पिछले एक वर्ष के दौरान श्री नरेन्द्र मोदी के विदेश यात्राओं के दौरान वहां उन्हें मिलने वाले अपार सम्मान और वहां पर भारतीय समुदाय सहित विदेशियों को भी हिंदी में संबोधित करने के परिदृश्य में भारत आज विश्व राजनीति में भी अपनी एक अलग पहचान बना रहा है।

भारत की इसी महत्ता को देखते हुए इसकी भाषा हिंदी को विश्व भाषा का दर्जा दिलाने के उद्देश्य से सन् 1975 में नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन तत्कालीन

विश्व हिन्दी सम्मेलन श्रृंखलाएँ

क्रम	तिथि	नगर	देश
1.	10-12 जनवरी, 1975	नागपुर	भारत
2.	28-30 अगस्त, 1976	पोर्ट लुई	मॉरीशस
3.	28-30 अक्टूबर, 1983	नई दिल्ली	भारत
4.	02-04 दिसम्बर, 1993	पोर्ट लुई	मॉरीशस
5.	04-08 अप्रैल, 1996	पोर्ट ऑफ स्पेन	त्रिनिदाद एवं टोबेगो
6.	14-18 सितम्बर, 1999	लंदन	ब्रिटेन
7.	06-09 जून, 2003	पारामारिबो	सूरीनाम
8.	13-15 जुलाई, 2007	न्यूयॉर्क	अमेरिका
9.	22-24 सितम्बर, 2012	जोहांसबर्ग	दक्षिण अफ्रीका
10.	10-12 सितम्बर, 2015 (प्रस्तावित)	भोपाल	भारत



प्रधानमंत्री (स्वर्गीय) श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने करवाया था, ताकि हिंदी सिर्फ देश की ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व की भाषा बनकर उभरे एवं समूची दुनिया में इसका वर्चस्व स्थापित हो। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए तब से लेकर अब तक समय-समय पर विभिन्न देशों में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया जाता रहा है।

वर्तमान में विभिन्न देशों में हिंदी

सम्मेलनों के आयोजनों के माध्यम से हिंदी को अपना वर्चस्व स्थापित करने का एक सशक्त मंच मिला है। विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजनों और बाजार की संस्कृति के प्रभाव के कारण इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के विशुद्ध विदेशी चैनलों जैसे— स्टार, डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफिक का हिंदी में आना और साथ ही WORLD CUP और IPL मैचों की हिंदी में कमेंट्री होना

यही दर्शाता है कि हिंदी का वर्तमान, अतीत से बेहतर है और भविष्य वर्तमान से बेहतर होने वाला है। अतः हम निःसंदेह कह सकते हैं कि हिंदी के विकास की अनंत प्रगतिमय राहें हैं, क्योंकि “हिंदी बहता नीर है, कूप जल नहीं।”

जय हिंदी, जय भारत।।

हे मानव तू क्यों सोता है?

निरी./हि.अ. सत्येन्द्र सिंह,
ज.सं. शाखा, महानिदेशालय

हे मानव तू क्यों सोता है? पथ में कांटे क्यों बोता है?
चल उठ, भोर भई, सुबह आई जगाने को ।
सुबह की बेला तुझे उठा रही है ।
प्रेम सुधा बरसाने को, तुझे स्वस्थ बनाने को ।

हे मानव तू क्यों सोता है? पथ में कांटे क्यों बोता है?
चल उठ, भोर भई, सुबह आई जगाने को ।
सूर्य की किरणें तुझे उठा रही हैं ।
तेरा कर्म जगाने को, तुझे स्वस्थ बनाने को ।

हे मानव तू क्यों सोता है? पथ में कांटे क्यों बोता है?
चल उठ, भोर भई, सुबह आई जगाने को ।
चहचहाती चिड़ियाँ तुझे उठा रही हैं ।
मधुर संगीत सुनाने को, तुझे स्वस्थ बनाने को ।

हे मानव तू क्यों सोता है? पथ में कांटे क्यों बोता है?
चल उठ, भोर भई, सुबह आई जगाने को ।
बसंती हवा तुझे उठा रही है ।
अमृत तुझे पिलाने को, तुझे स्वस्थ बनाने को ।

हे मानव तू क्यों सोता है? पथ में कांटे क्यों बोता है?
चल उठ, भोर भई, सुबह आई जगाने को ।
बहती नदियों की कलकल तुझे उठा रही है ।
तेरा भाग्य जगाने को, तुझे स्वस्थ बनाने को ।

हे मानव तू क्यों सोता है? पथ में कांटे क्यों बोता है?
चल उठ, भोर भई, सुबह आई जगाने को ।
फूलों की खुशबू तुझे उठा रही है ।
तुझे मदहोश कर जाने को, तुझे स्वस्थ बनाने को ।

हे मानव तू क्यों सोता है? पथ में कांटे क्यों बोता है?
चल उठ, भोर भई, सुबह आई जगाने को ।
प्रकृति तुझे उठा रही है ।
कर्म पथ पर बढ़ जाने को, तुझे स्वस्थ बनाने को ।

हिंदी राज की भाषा,
काज की भाषा ।



राजभाषा हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान

निरी./हि.अ. राकेश कुमार
गु.के.1 अजमेर

भारत देश की अघोषित राष्ट्रभाषा एवं घोषित राजभाषा हिंदी का विकास विश्व स्तर पर तीव्र गति से हो रहा है। 11 मई, 2015 को एक हिंदी दैनिक समाचार पत्र में मैंने यह पढ़ा कि अमरीका की यूनिवर्सिटी ऑफ मोन्टाना अपने छात्रों को अगले शैक्षणिक वर्ष 2016 से हिंदी भाषा सीखने का अवसर उपलब्ध कराएगी। क्या यह खबर राजभाषा हिंदी के बढ़ते हुए महत्व को रेखांकित नहीं करती है? संचार क्रान्ति तथा नये वैश्वीकरण के वर्तमान दौर, पारस्परिक गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा के युग में राजभाषा हिंदी की परिधि भी निरन्तर बढ़ती जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की लोकप्रियता के पीछे कई कारक कार्य कर रहे हैं। उनमें से प्रमुख है— वैश्विक स्तर पर व्यापार को स्थापित करने के लिए विस्तृत बाजार की ललक एवं निवेश की संभावनाओं को तलाशने के लिए हिंदी साहित्य में रुचि, भारत पर राजनैतिक दृष्टि से नजर रखने के लिए, भारत के साथ राजनयिक एवं आर्थिक आदि संबंधों को प्रोत्साहित करने के लिए आदि—आदि। मैं कुछ उदाहरण रखना चाहता हूँ जिनसे यह

स्पष्ट हो जाएगा कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा हिंदी किस प्रकार नए आयाम रच रही है—

1. भारत के प्रधानमंत्री ने विदेश यात्रा के दौरान प्रवासी भारतीयों से हिंदी में बात की है। इससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा का महत्व बढ़ा है।
2. मॉरीशस, सूरीनाम व त्रिनिडाड देशों के अधिकांश नागरिक भारतीय मूल के हैं।
3. विश्व के अनेक देशों में प्रवासी भारतीय बसे हुए हैं जो अपने मूल अर्थात् भारत देश की हिंदी भाषा को अपने देश में फलने-फूलने में योगदान दे रहे हैं।
4. विदेशी विश्वविद्यालयों में कई विद्वान हिंदी में शोध आदि कर रहे हैं। इनमें रूस के डा. ई.पी. चेलिशेव, प. जर्मनी के डॉ. लो. ठार लुत्से एवं हंगरी के इमरै बंगा आदि उल्लेखनीय हैं।
5. विश्व स्तर पर कई हिंदी सेवी संस्थाएं हिंदी के प्रचार-प्रसार व संवर्द्धन के लिए कार्य कर रही हैं। इनमें भारतीय सांस्कृतिक

संबंध परिषद, विश्व के 37 देशों में कार्यरत राष्ट्रभाषा प्रचार समितियां आदि प्रमुख हैं।

6. भारतीय मूल के लोग जिन देशों में बसे हैं वहां रेडियो पर भी हिंदी के कार्यक्रम आदि प्रसारित होते हैं।
7. बॉलीवुड की हिंदी फिल्मों विदेशों में भी अपनी लोकप्रियता बिखेर रही हैं।
8. भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान और म्यांमार में हिंदी का प्रशिक्षण होता है।
9. नेपाल में अनेक स्कूलों में हिंदी अध्ययन के साथ-साथ त्रिभुवन विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर और पी.एच.डी. तक हिंदी अध्ययन की सुविधा है।
10. विदेशों में हिंदी ग्रंथों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।
11. भारत के अलावा विश्व के 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी में अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है।
12. विदेशों में अनेक ऐसे विद्वान हैं जो हिंदी के प्रचार-प्रसार में रचनात्मक स्तर पर सक्रिय हैं। मॉरीशस के पं. आत्माराम, फीजी के कमलाप्रसाद मिश्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुके हैं।



एटीकेट्स ने हिन्दुस्तान का बेड़ा गरक कर दिया। जहां देखो एटीकेट। छींक आए तो सॉरी कहो। डकार आए तो सॉरी कहो। किसी को टच हो जाओ तो सॉरी। सॉरी कहने से सब मामला सही। मेरे घर मेहमान आए थे। धर्मपत्नी चाय ले आई। चाय के साथ कुछ नमकीन तथा मीठा भी था। अब ये जो जनाब मेरे घर पधारे थे, इनके साथ बच्चा भी था। बच्चों की चाय में क्या दिलचस्पी हो सकती है। छोटा बच्चा बेचारा। होगा कोई 4 या 5 साल का। वह एक बार मीठे की प्लेट की तरफ देखे तथा फिर अपनी मम्मी की तरफ। मैं मामला समझ गया कि यह वह मम्मी है जिसने इस छोटी उम्र में बच्चे पर एटीकेट्स के हथियार से वार किया है। मैंने मिठाई की प्लेट से दो पीस उठाकर बच्चे को दिए। वह बहुत खुश था। होना ही था। वह तो बच्चा था बेचारा यहां बड़े-बड़ों को मीठा देखकर मुँह में पानी आ जाता है।

एटीकेट्स। सिम्पल सा एटीकेट्स यह है कि आपकी वजह से किसी को कोई तकलीफ न हो बस। बात खत्म। सबसे ज्यादा तमीजदारों से ही परेशानी होती है। पता नहीं किस बात से बुरा मान जाए। हुआ यूँ कि मैं पहली बार शहर आया था तथा मेरे ही एक रिश्तेदार के साथ चिड़िया-घर देखने आया था। वे दोनों नये-नये शादी-शुदा दो जोड़े थे। मैं तो जबरन चिपक लिया था उनके साथ। मैं भी तब कक्षा 8 में था। चिड़िया-घर देखने के बाद कुछ खाने के लिए वही अहाते में वे एक रेस्त्रां में बैठ गये। दोनों युवक ग्रामीण थे तथा उनकी पत्नियां शहरी थीं। उन्होंने मसाला डोसा का आदेश दिया तथा मुझ गरीब से पूछा कि तुम क्या लोगे। गांव के बच्चे अधिक शर्मीले

एटीकेट्स

निरी./हि.अ. टी.एस. ढाका
गु.के. केरिपुबल गुडगांव

होते हैं। मैंने कहा जो आप खाएं मेरे लिए भी मंगवा लें। यद्यपि मैंने यह नाम पहली बार सुना था। मैं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गांव का रहने वाला और मसाला डोसा डिश कोसों मील दूर की। पर चलो देखा जाएगा, भली करेंगे राम। थोड़ी देर में वेटर दो थालियों में कुछ लम्बा सा सामान लेकर आया। हां उसमें कुछेक औजार टाईप सामान भी था। बाद में पता चला उन्हें छुरी-कांटा कहते हैं। मेरी हालत पतली थी। पहली बार मसाला डोसा का ऑपरेशन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। सोचा खाएंगे तो ये चारों भी। देखते हैं। व्यक्ति के मनोभाव को आंखें तथा चेहरा बता देते हैं। मेरी दुविधा को एक सज्जन समझ गए थे। उन्होंने पूछ ही लिया कि पहली बार खा रहे हो। मैंने कहा, हां पहली बार और देखा भी पहली बार ही है। वे मुस्कुराए और उन्होंने उस डोसे का एक किनारा पकड़ा और उसे पूरा खोल दिया। उसमें मसाला अलग हो गया तथा डोसा अलग। उन्होंने डोसे को कहा कि ये है रोटी तथा मसाले को कहा ये है सब्जी तथा सांबर को कहा यह चटनी। तब कहीं मेरी जान में जान आई और मैं शुरु को गया।

परन्तु कुछ माई के लाल हैं कि चाहे कुछ हो जाए। खाएंगे छुरी-कांटे से ही। चाहे छुरी से खाने में लाख दिक्कत हो। चूंकि एटीकेटिड कहलाना है। तमीजदार कहलाना है। मैंने 30 वर्षों के सेवाकाल में लगभग पूरा भारत देखा है। कुछ तैनातियों के कारण तथा कुछ

चार वर्षीय एल.टी.सी. के कारण। मुफ्त की सैर कराई है मुझे मेरे के.रि.पु.बल ने। मैंने गांवों को, लगभग पूरे भारत के गांवों को देखा है। गांव के लोग अक्सर हाथ से ही खाते हैं। चम्मच भी कहीं-कहीं इस्तेमाल होती है। पर हम तो अंग्रेज हैं। उन्हीं से सीखा है, उन्हीं की नकल करते हैं। अब बात सिर्फ खाने के तरीको तक नहीं रही। पहनावे में भी आ गई। पहनावा। क्या खाक पहनावा। मेरे रिश्तेदार के सुपुत्र हैं। जींस के बाहर कच्छा झांक रहा था। लिवाईस लिखा था। मैंने कहा बेटे जींस ऊपर कर लो। हंसने लगा। कहा अंकलजी ये फैशन है। बाहर ही रखा जाता है आज कल। आप पुराने जमाने के हैं। आपको पता नहीं है।

खाना, पहनना, पीना, रहना-सहना सब कुछ विदेशी हो चला है। अब कोई कहे कि फटी जींस में कौन सा एटीकेट है। पर क्या हम पूरी तरह से पूरे कपड़े नहीं पहन सकते। या हम लोग जो फोर्स में हैं पूरी वर्दी, पूरी पैन्ट-शर्ट या पूरी टी शर्ट या पूरी जींस पहनते हैं तो क्या हम पागल हैं या फूहड़ दिखते हैं। मैं जानता हूँ कि यह बदलाव की आंधी है। आएगी ही। इसे कोई रोक भी नहीं सकता। संगीत में पहले पक्के राग, फिर के.एल. सहगल, फिर रफी लताजी, किशोर कुमार, मुकेश और अब यो यो हनी सिंह। यह सब जमाने की रफ्तार है। परिवर्तन संसार का नियम है। होगा ही। परन्तु कुछ फूहड़पन कम करें तो अच्छा है। नकल भी करें तो अक्ल से। जो अच्छा है सुन्दर है उसे कॉपी करें। जो रद्दी है बेकार है उसे क्या कॉपी करना चाहिए? पर हमारी कौन सुनेगा सरकार। हम लोग तो पुराने लोग हैं। बीते जमाने की बातें कर रहे हैं।



भारतीय संविधान में राजभाषा हिंदी की स्थिति

निरी./हि.अ. अमीरुद्दीन,
ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, कूटा

संविधान के 17वें भाग में राजभाषा संबंधी उपबंध दिए गए हैं, जिनमें अनुच्छेद 343 से 351 तक 9 अनुच्छेदों में राजभाषा के संबंध में विस्तार से बताया गया है। जिनका संक्षेप में मुख्य विवरण निम्नलिखित है:-

1. **अनुच्छेद-343(1):-** संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी तथा भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप (0, 1, 2, 3, 4, 5) मान्य होगा।
- अनुच्छेद-343(2):-** संविधान के प्रारंभ से 15 वर्ष की अवधि तक अंग्रेजी भाषा का प्रयोग।

- अनुच्छेद-343(3):-** 26 जनवरी 1965 के बाद भी सरकारी कार्य में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने के लिए अधिनियम संरचना का प्रावधान।
- अनुच्छेद-344:-** राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति।
- अनुच्छेद-345:-** राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं।
- अनुच्छेद-346:-** एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा।

- अनुच्छेद-347:-** किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।
- अनुच्छेद-348 :-** उच्चतम और उच्च न्यायालयों की भाषा।
- अनुच्छेद-349:-** भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया।
- अनुच्छेद-350 :-** व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा।
- अनुच्छेद-351 :-** हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश

राजभाषा हिंदी संबंधी महत्वपूर्ण तिथियां

1. 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।
2. सन् 1955 में केंद्रीय कार्मिकों के हिंदी प्रशिक्षण हेतु हिंदी शिक्षण योजना प्रारंभ की गई।
3. सन् 1955 में ही राजभाषा आयोग का गठन किया गया।
4. सन् 1962 में कोंकणी, मणिपुरी व नेपाली भाषाओं को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किया गया।
5. सन् 1963 में राजभाषा अधिनियम बनाए गए।
6. सन् 1967 में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में राजभाषा की सर्वोच्च समिति— केंद्रीय हिंदी समिति का गठन किया गया। इस समिति में प्रधानमंत्री के अतिरिक्त नामित केंद्रीय मंत्री, कुछ राज्यों के मुख्यमंत्री, सांसद तथा हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के विद्वान सदस्य के रूप में शामिल किए जाते हैं।
7. सन् 1968 में राजभाषा संकल्प पारित किया गया, जिसमें हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग के लिए गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार करने आदि की बात कही गई।
8. सन् 1971 में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो का गठन किया गया।
9. सन् 1975 में स्वतंत्र राजभाषा विभाग की स्थापना हुई।
10. सन् 1976 में राजभाषा नियम बनाए गए।
11. सन् 1976 में ही संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया।
12. सन् 1987 में “राजभाषा नियम-1976” में संशोधन किए गए।
13. सन् 2004 में बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली भाषाओं को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किया गया।
14. सन् 2007 एवं 2011 में “राजभाषा नियम-1976” में पुनः संशोधन किए गए।



राजभाषा हिंदी का बढ़ता हुआ कद

सु.मे./हिं.अ. मोहन चन्द्र पान्डे
ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, रामपुर

15 अगस्त 1947 को देश के स्वतंत्र होने तथा 26 जनवरी 1949 को देश का संविधान लागू होने पर देश की राजकाज की कौन सी भाषा होगी उस पर विचार किया गया। अतंतः 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को देश की राजभाषा घोषित किया गया और संविधान के अनुच्छेद 343(1) में इसको स्थान दिया गया। तब से देश में लगातार हिंदी को उसका स्थान दिलाने के प्रयास लगातार जारी हैं। वर्तमान समय में हिंदी सम्पर्क भाषा के रूप में पूरे भारत में प्रयोग में लाई जाती है। देश के एक राज्य का व्यक्ति जब दूसरे राज्य में जाता है तो वह हिंदी में ही दूसरे राज्य के व्यक्ति से वार्तालाप कर पाता है। इस प्रकार हिंदी राजभाषा से अधिक सम्पर्क भाषा के रूप में भारत में प्रचलित है।

वर्तमान युग संचार कान्ति का युग है। देश की आबादी तेजी के साथ संचार साधनों से जुड़ रही है। आज प्रत्येक व्यक्ति के पास मोबाइल है, मोबाइल ही नहीं है बल्कि स्मार्ट फोन है और देश की एक बड़ी आबादी इन्टरनेट से जुड़ चुकी है और लगातार इन्टरनेट यूजर की संख्या बढ़ती जा रही है। ट्विटर, फेसबुक, ब्लॉग, गूगल, यू ट्यूब जैसे सामाजिक

माध्यमों पर लोगों द्वारा लगातार हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है। अभी हाल ही में प्रधानमंत्री ने 'डिजिटल भारत' कार्यक्रम की शुरुआत की है। इस कार्यक्रम के माध्यम से देश को एक इलेक्ट्रॉनिक सशक्त अर्थव्यवस्था में बदला जाना है। इस कार्यक्रम के तहत भारत सरकार की मंशा है कि सभी सरकारी विभाग और भारत की जनता एक दूसरे से डिजिटल रूप से या इलेक्ट्रॉनिक तौर पर जुड़े, ताकि प्रशासन को प्रभावी तरीके से चलाया जा सके।

सरकारी विभागों में करोड़ों रुपये खर्च कर प्रत्येक वर्ष हिंदी पखवाड़ा भी मनाया जाता है। वरिष्ठ अधिकारियों की तरफ से निर्देश भी जारी किये जाते हैं कि विभाग के सभी लोग हिंदी भाषा में काम करें, लेकिन उसके बाद भी अपेक्षा के अनुरूप कार्य नहीं होता है। अभी ऐसे कई कार्यालय हैं जहाँ हिंदी भाषा का प्रयोग नाम मात्र ही होता है। हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी के विकास का उत्तरदायित्व संघ सरकार को सौंपा है। इसके अनुपालन में केन्द्र सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया गया है कि केन्द्र सरकार का सारा काम हिंदी में किया जाए किन्तु, अपेक्षा के अनुरूप प्रगति नहीं हुई है। हिंदी को देश

की राजभाषा बनाने के लिए इसे देश के प्रत्येक राज्य तक पहुँचाना होगा। जिन राज्यों में इसका प्रयोग कम हो रहा है, उन राज्यों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। प्रचार-प्रसार में तेजी लानी होगी तथा वहाँ के लिए प्रोत्साहन योजनाओं को बढ़ाना होगा। भारत सरकार को इसके लिए विशेष प्रयास करने होंगे।

सरकार, सामाजिक माध्यमों, भारतीय सिनेमा, पत्रकारिता तथा हिंदी लेखकों व हिंदी प्रेमियों द्वारा किये जा रहे प्रयासों से यह उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा तथा जनभाषा से आगे बढ़ते हुए विश्वभाषा बनेगी, किन्तु इस बात को भी स्वीकार करना पड़ेगा कि हिंदी के प्रचार-प्रसार को देश/विदेश में सतत् बढ़ाये जाने की आवश्यकता है, तभी हिंदी अपना गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर पायेगी।





सशक्त अभिव्यक्ति की भाषा हिन्दी

निरीक्षक / मं. मुकेश कुमार

35 बटा.

भारत जैसे विशालतम देश जिसमें अलग-अलग संस्कृति, रीति-रिवाज, वेशभूषा व बोलचाल की भाषा वाले नागरिक रहते हों उस देश में सभी की अभिव्यक्ति हेतु एक भाषा का होना अति आवश्यक है। चूंकि हमारे देश में हर चार कोस पर भाषा का स्वरूप बदल जाता है अतः देश की एकरूपता के लिए किसी एक भाषा का होना अति आवश्यक है। यदि अभिव्यक्ति की सशक्त भाषा न होती तो देश भाषाई मुश्किलों के कारण विखण्डित हो जाता। हमें गर्व है कि हिन्दी हमारे देश की सशक्त अभिव्यक्ति की भाषा है। हम अपने देश की संस्कृति का सिंहावलोकन करें तो इसमें प्रथमतः संस्कृत प्रमुख भाषा थी जो कि अत्यन्त ही विकसित भाषा थी। वर्तमान में उपलब्ध संस्कृत भाषा विभिन्न साहित्य को यदि देखा जाए तो संस्कृत भाषा को बोलने, लिखने का एक वैज्ञानिक आधार था। छठीं शताब्दी ईसा पूर्व से पहले वैदिक भाषा जिसमें वेद, संहिता, उपनिषदों, वेदान्तों की रचना की गई थी उनकी शब्द रचना व्याकरण ने इस भाषा को इतना अधिक सशक्त किया था कि कालान्तर में अपभ्रंश होते-होते भी आधुनिक हिन्दी में संस्कृत के शब्दों की बहुतायत है। संस्कृत से उभरी आधुनिक हिन्दी भाषा को बोलने और

लिखने का स्वरूप अभी भी उतना ही सशक्त है जितना कि वैदिक काल में था। आधुनिक हिन्दी को बोलने लिखने का अपना एक वैज्ञानिक ढंग है तथा लिपि विभिन्न हिस्सों में विभक्त है जैसे स्वर, व्यंजन, अनुस्वर आदि जो कि इसके बोलने की विधि को व्यक्त करते हैं— जैसे अर्द्धविराम, पूर्ण विराम विभिन्न प्रकार की मात्राएं, जो कि शब्दों के सही उच्चारण हेतु अति आवश्यक हैं। हिन्दी भाषा इतनी ग्राह्य भाषा है कि इसको धाराप्रवाह बोलते समय अन्य भाषाओं के शब्द भी आसानी से समाहित हो जाते हैं एवं आजकल प्रचलित हिंग्लिश भाषा भी हिन्दी भाषा की ग्राह्यता का एक स्वरूप है।

सदियों से चली आ रही यह भाषा आज भारत सरकार की राजभाषा है। वर्तमान परिपेक्ष्य में राजकीय कार्यों में प्रयुक्त होने वाली भाषा का स्वरूप कैसा हो यह एक विचारणीय विषय है। पूर्व में हम देखते हैं कि जो जितनी ज्यादा कठिन भाषा लिखता है चाहे वह अंग्रेजी हो या हिन्दी उसे उस भाषा का उतना ही विद्वान माना जाता है। हिन्दी भाषा में अनेकानेक शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग इस भाषा की गरिमा को बढ़ाते हैं एवं वाक्यांशों में सुन्दर शब्द रचना उत्पन्न होती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि हिन्दी में काम करने वाले कार्मिकों को हिन्दी

भाषा का पर्याप्त ज्ञान हो, वाक्यांश की रचना में भाषा की विभिन्न ऋचाओं का प्रयोग करना आता हो, जिससे कि एक स्तरीय प्रारूप तैयार हो सके। इसके लिए हमें बहुत प्रयास करना होगा एवं समय भी लगेगा। चूंकि हमारे बल में विभिन्न प्रान्तों से लोग आते हैं, जिनकी अलग-अलग भाषाएं होती हैं, अतः उन्हें इस प्रकार की हिन्दी भाषा सीखने में बहुत समय लग सकता है। फिर भी यदि धीरे-धीरे प्रयास किया जाए तो हिन्दी का बिगड़ता हुआ स्वरूप सुधर सकता है।

हमें गर्व है कि हम एक ऐसी भाषा के ज्ञाता हैं जिसका विराट स्वरूप है, अति प्राचीनतम है, साहित्य से भरपूर है और अब हम इसका प्रयोग देश की राजभाषा के रूप में कर रहे हैं। इस भाषा का उत्तरोत्तर विकास हो एवं इसका स्तर सुधरे यही संकल्प हम हिन्दी दिवस पर लें।

**हिन्दी
मेरी
पहचान
है**



हिन्दी तुझे सलाम

के.के. पाण्डेय

कमाण्डेंट, गुप केन्द्र, करिपुबल, रांची

हिन्दी हिन्दुस्तानियों के लिए एक भाषा मात्र नहीं है, बल्कि हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। हिन्दी हमारा मजहब है जिससे हम भावना के डोर से बंधे हुए हैं। जब भी हम किसी विदेशी या अहिन्दी भाषी क्षेत्र के व्यक्ति को हिन्दी में बोलते हुए सुनते हैं उससे स्वतः भावनात्मक जुड़ाव हो जाता है। ऐसे कई विदेशी कलाकार हैं जो हिन्दी सिनेमा या टी0वी0 पर हिन्दी रियलिटी शो में अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं। उन्हें देखते ही उनके अन्दर एक हिन्दुस्तानी की छवि उभरती है जिसका श्रेय हिन्दी को जाता है।

हिन्दी के करिश्मे को स्वतंत्रता आन्दोलन के समय भी गाँधी जी ने महसूस किया था और उनके प्रयत्नों से सर्वसम्मति से यह स्वीकार किया गया कि बहुभाषी भारत को जोड़ने में अगर कोई भाषा संपर्क भाषा का रूप ले सकती है तो यह क्षमता एवं शक्ति केवल हिन्दी में ही है और अपनी इस दृष्टिकोण को गाँधी जी के करिश्माई व्यक्तित्व ने संभव कर दिखाया कि लोग अपनी मातृभाषा का दुराग्रह ओढ़े बगैर स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ पूरी तरह जुड़ गए जिसका एक ही लक्ष्य था "अंग्रेजों भारत छोड़ो", स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। आजादी के

बाद विकासशील भारत के सर्वांगीण विकास के लिए देश के कर्णधारों ने यह जरूरत महसूस की कि हिन्दी में वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली का अभाव है और इस कमी को पूरा किया जाना चाहिए। तब तक अंग्रेजी राज-काज की भाषा बनी रहेगी, जब तक कि हिन्दी अपनी भाषा सामर्थ्य को राज-काज के लिए समुचित रूप से विकसित नहीं कर लेती। तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की गई। आवश्यकतानुसार नए-नए शब्द निर्मित किए जाने लगे। गाँधीजी द्वारा स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के द्वारा देश के कोने-कोने में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए दृढ़ता के साथ कार्य किया गया।

आज तमिल हो या तेलुगू, असमिया हो या बंगाली, मराठी हो या उड़िया भाषा-भाषी, वर्तमान में सभी यह महसूस कर रहे हैं कि उनकी मातृभाषाओं को हिन्दी से खतरा नहीं है क्योंकि हिन्दी अपने विकास में उड़िया से भी शब्द ग्रहण कर रही है और बांग्ला से भी। अगर उनकी मातृभाषाओं को किसी भाषा से खतरा है तो वह है अंग्रेजी। क्योंकि स्वतंत्र होने के बाद भी औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रस्त लोग अब भी यह मानते हैं कि अंग्रेजी ही एकमात्र उनके विकास की भाषा है।

हालाकि 90 के दशक के बाद आर्थिक उदारीकरण के चलते और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उपस्थिति के कारण ऐसा लगने लगा था कि हिन्दी को बहुत नुकसान होगा। लेकिन यह धारणा इस समय तो निर्मूल सिद्ध हो रही है क्योंकि बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपना उत्पाद बेचने और देश के कोने-कोने में अपने उपभोक्ताओं तक पहुंचने के लिए मुख्य रूप से जिस भाषा में अपने विज्ञापन तैयार करती है वो हिन्दी है। हिन्दी ने इस धारणा को भी गलत साबित किया है कि हिन्दी रोजगारोन्मुख नहीं है। जिस गति से हिन्दी का प्रचार हो रहा है उस गति से हिन्दी भाषा में भी रोजगार की नई संभावनाएँ उभर रही है। हिन्दी सिनेमा के बाद मनोरंजन टी0वी0 चैनल्स, विज्ञापन, अखबार, न्यूज चैनल्स में हिन्दी आपको रोजगार दिला सकती है। डबिंग, स्क्रिप्टिंग, संवाद लेखन, टी0वी0 धारावाहिक सभी के लिए हिन्दी लिखने वालों की मांग है। इसके साथ ही यदि आप अंग्रेजी या फिर देश-विदेश की अन्य भाषा के जानकार भी हैं तो फिर अनुवादक के तौर पर भी रोजगार के अवसर उपलब्ध है। कम्प्यूटर के शुरुआती दौर में यह एक आम धारणा थी कि कम्प्यूटर हिन्दी के लिए फ्रेन्डली नहीं है और इसलिए यदि आपको वक्त के साथ



कदम मिलाकर चलना है तो अंग्रेजी सीखनी ही होगी, लेकिन हिन्दी प्रेमी तकनीशियनों ने कम्प्यूटर माध्यम पर भी हिन्दी का परचम लहराया है, तभी तो हिन्दी में ब्लॉग लिखना, वेबसाइट बनाना और पत्र-पत्रिकाएँ चलाना आसान हो गया है। हिन्दी में ब्लॉगिंग हिन्दी की समृद्धि का एक नया आयाम है जिसके तहत कई युवा हिन्दी में अपनी भावनाएँ, विचार और जिज्ञासाएँ व्यक्त कर रहा है। ये सिर्फ भारत के युवा ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि विदेशों में पढ़ रहे या फिर रोजगार में लगे हुए कई युवा भी हिन्दी में ब्लॉगिंग के माध्यम से अपनी भाषा, अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं।

फिलहाल विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों और कई सैकड़ों छोटे-बड़े केन्द्रों में विश्वविद्यालय स्तर से लेकर शोध स्तर तक हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। विदेशों में 25 से ज्यादा पत्र-पत्रिकाएँ लगभग नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। यू0ए0ई0 के 'हम.एफ.एम.' सहित कई देशों में हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं, इनमें बी0बी0सी0, जर्मनी के डॉयचे वेले, जापान के एन.एच.के. बर्ल्ड और चीन के चायना रेडियो इंटरनेशनल की हिन्दी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अमेरिका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में लगे प्रो0 हरमन वॉन ओलफान बताते हैं "1960 के आसपास ही अमेरिका में हिन्दी की पढ़ाई शुरू हुई थी और मेरा संबंध हिन्दी जगत से करीब 45 सालों

से है। अब हिन्दी के प्रचार प्रसार में गति आई है क्योंकि प्रवासी बच्चे हिन्दी पढ़ाए जाने को लेकर स्थानीय सरकार पर दबाव बना रहे हैं। यह सही है कि अब तक अमेरिका के हाई स्कूलों में हिन्दी का प्रवेश अधिक नहीं हुआ है लेकिन अब स्थिति बदल रही है। 10 साल पहले तक अमेरिका में केवल 25 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती थी लेकिन अब 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। मनोरंजन की दुनिया में 'सलाम-नमस्ते' नामक हिन्दी रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया जा रहा है।" विश्व जनसंख्या 1999 के आँकड़ों के अनुसार विश्व में हिन्दी का व्यवहार करने वालों की संख्या 1.1 अरब है। डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल ने निरंतर 20 सालों तक भारत और विश्व में भाषाओं संबंधी आँकड़ों का विश्लेषण करके सिद्ध किया है कि विश्व में हिन्दी प्रयोग करने वालों की संख्या चीनी से भी ज्यादा है और हिन्दी अब पहले स्थान पर है।

आखिर में कहना चाहूँगा कि हिन्दी इतनी सामर्थ्यवान, ऊर्जावान एवं दमदार है कि भारत की एकता, अखंडता एवं धर्मनिरपेक्षता को एक नई दिशा देगी। एक नया उत्साह एवं विश्वास देगी। परस्पर सौहार्द एवं भाईचारे की मिसाल बनेगी एवं आनेवाले समय में इसका परचम विश्व के कोने-कोने में लहराएगा। मैं इस शक्तिशाली भाषा हिन्दी को सलाम करता हूँ।

हे ईश्वर वह दिन कब आयेगा

(धर्मेन्द्र कुमार झा)
द्वितीय कमान अधिकारी
107 बटा10 द्रुत कार्य बल

हे ईश्वर वह दिन कब आयेगा
जब हम अपनी राजभाषा को
गर्व से उसके अधिकार को
मान-मर्यादा सहित करेंगे प्रतिष्ठित
उन्मुक्त उदार हृदय से
पुलकित हो कोटि-कोटि जन
इसे बेझिझक अपनायेगा।
हे ईश्वर वह दिन कब आयेगा

अपनी इस जननी जन्मभूमि के स्वर
को
प्रभृति-किरण जी कोमल भाषा को
राष्ट्र की अस्मिता से जोडकर
अंधियारी ओछे भावों को त्यागकर
तन-मन-धन से सींचा जायेगा।
हे ईश्वर वह दिन कब आयेगा।

निज भाषा उन्नति ही है सब उन्नति
का सार
कह रही भारत माता करके पुकार
कटो तन्द्रा पूर अब तो प्यारों
अपना दुःख वह क्या करे निवेदन
स्वर रहते गूँगा हो गया है उसका
चितवन
खुले हृदय से सुन पायेंगे जब हम
उसकी मन की यह करुणा गाथा
हे ईश्वर वह दिन कब आयेगा।

महानिदेशक के दौरे

ग्रुप केन्द्र नीमच



महानिदेशक का नीमच के सिविल प्राधिकारियों द्वारा एयरपोर्ट पर स्वागत।



ऑक्टरलोनी हाउस के बारे में महानिदेशक को बताते हुए श्री दुर्गा प्रसाद, विशेष महानिदेशक।



महानिदेशक का स्टेशन राजपत्रित अधिकारी मैस में स्वागत।



महानिदेशक स्टेशन क्वार्टर गार्ड का निरीक्षण करते हुए।



महानिदेशक एवं वरिष्ठ अधिकारियों को ऑडिटोरियम के बारे में बताते हुए श्री सतपाल रावत, पुउमनि, सीटीसी, नीमच।



शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए महानिदेशक।



महानिदेशालय के कार्यक्रम 68वां स्वतंत्रता दिवस



महानिदेशालय में 15 अगस्त के अवसर
झंडारोहन के दौरान सलामी देते जवान
एवं अधिकारी।



महानिदेशालय में 15 अगस्त के अवसर झंडारोहन के दौरान सलामी देते जवान एवं अधिकारी।

सद्भावना दिवस



सद्भावना दिवस के अवसर पर सभी अधिकारियों एवं जवानों को
शपथ दिलाते हुए महानिदेशक, केरिपुबल।



शपथ लेते हुए अधिकारी गण।

**“क्रोध करने का मतलब है, दूसरों की गलतियों
की सजा स्वयं को देना”**

सीधे भर्ती राजपत्रित अधिकारियों का प्रस्तुतीकरण



महानिदेशक सीधे भर्ती अधिकारियों को संबोधित करते हुए।



महानिदेशक के संबोधन को सुनते हुए सीधे भर्ती अधिकारियों का दल।



शहीद श्री हीरा कुमार झा, द्वि.क.अ., की पत्नी अपने पति के नाम की ट्रॉफी प्रस्तुतीकरण में प्रथम आए सीधे भर्ती अधिकारियों को प्रदान करते हुए।



शहीद श्री हीरा कुमार झा, द्वि.क.अ., की पत्नी को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए श्री प्रकाश मिश्र, महानिदेशक।

देशभक्तों को अक्सर लोग पागल कहते हैं!
कह दो उन्हें..
सीने पर जो जख्म हैं!
सब फूलों के गुच्छे हैं!
हमे पागल ही रहने दो!
हम पागल ही अच्छे हैं!





पुस्तक का विमोचन



श्री यासिर अवासी द्वारा लिखित पुस्तक 'दि सिनलेस विक्टिम्स' का आवरण पृष्ठ।



श्री यासिर अवासी द्वारा लिखित पुस्तक की समाचार पत्र 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में समीक्षा।

केरिपुबल के उप कमाण्डेंट श्री मो. याशिर अवासी द्वारा लिखित पुस्तक सिनलेस विक्टिम्स (निष्पाप पीड़ित) का विमोचन दिनांक 19/08/2015 को माननीय भारत के उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी द्वारा किया गया। यह पुस्तक सिनलेस विक्टिम्स (निष्पाप पीड़ित) छोटी कहानियों का संग्रह है और विशुद्ध रूप से कल्पना पर आधारित है। कहानियां उत्तेजना एवं खुशी के सोच को ताजा करने की अपील कर रही है। पुस्तक मानव व्यवहार, मूल्यों और रिश्तों की विज्ञान का उपज है। इस पुस्तक की कहानियां जीवन और मृत्यु, प्रेम और घृणा, विश्वासघात और वादा और विश्वास एवं रिश्ते के वर्तमान एवं अतीत के आसपास घूमती हैं।



उप राष्ट्रपति श्री हमीद अंसारी श्री यासिर अवासी, उप कमा0 द्वारा लिखित पुस्तक 'दि सिनलेस विक्टिम्स' का विमोचन करते हुए।



महानिदेशक ने श्री यासिर अवासी, उप कमा0 द्वारा लिखित पुस्तक 'दि सिनलेस विक्टिम्स' का विमोचन करते हुए।



विविध समाचार

गुप केन्द्र सोनीपत में परिवारिक आवास का उद्घाटन



श्री प्रकाश मिश्र, गुप केन्द्र सोनीपत में
टाइप-2 आवास का उद्घाटन करते
हुए ।

गुप केन्द्र सोनीपत में पौधा लगाते हुए
महानिदेशक श्री प्रकाश मिश्र



श्री प्रकाश मिश्र, गुप केन्द्र सोनीपत में
टाइप-2 आवास का उद्घाटन करते हुए ।



महानिदेशक गुप केन्द्र सोनीपत की
विजिटर बुक में अभ्युक्ति दर्ज करते
हुए ।





नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति पुरस्कार समारोह

ग्रुप केन्द्र, इम्फाल



सं. रा. स. के संयोजक माननीय श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी, संसद सदस्य द्वारा राष्ट्रपति जी के आदेशों के संकलन पुस्तिका को श्री विमल कुमार बिष्ट, पु.उ.म.नि., ग्रुप केन्द्र इम्फाल को प्रदान करते हुए ।



श्री विक्रम सहगल, पुउमनि, ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल इम्फाल को राजभाषा कार्यान्वयन का प्रथम शील्ड प्रदान करते हुए श्री बीरेन्द्र कुमार प्रधान महालेखाकार, इम्फाल ।

ग्रुप केन्द्र, लखनऊ



“परक्रम पुस्तिका” का विमोचन करते हुए श्री पी.जे.मोहने, महानिरीक्षक, केन्द्रीय सेक्टर, लखनऊ ।

नराकास अध्यक्ष डॉ. ओ.के. सिन्हा श्री एन.के.सिंह, पुउमनि, ग्रुप केन्द्र लखनऊ को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए ।



ग्रुप केन्द्र रांची



श्रीमती उषा किरण कण्डुलना, उपमहानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र द्वारा माननीया राज्यपाल झारखंड सरकार मुख्य अतिथि को शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया।



मुख्य अतिथि माननीया राज्यपाल श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ग्रुप केन्द्र के द्वारा प्रकाशित पुस्तक "प्रतिबिम्ब" के द्वितीय अंक का अनावरण करती हुई।

ग्रुप केन्द्र रामपुर



मध्य सेक्टर की भारोतोल्लन टीम ने के0रि0पु0बल अन्तर सेक्टर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

104 बटालियन



दिनांक 30/07/15 को महामहीम पूर्व राष्ट्रपति स्व. डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जी की स्मृति में वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया।

ग्रुप केन्द्र गांधीनगर



श्रीमती स्नेहलता कुमार, सचिव, भारत सरकार से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए श्री संदीप कुमार चौबे, कमाण्डेण्ट, के.रि.पु.बल।

ग्रुप केन्द्र भोपाल



मध्य प्रदेश सेक्टर मुख्यालय के वार्षिक पत्रिका 'प्रयास' का विमोचन श्री पी0के0 पाण्डेय, पुलिस महानिरीक्षक, मध्य प्रदेश सेक्टर द्वारा किया गया।



उपलब्धियाँ

परिचालन शाखा

जुलाई के महीने में 135 सफल परिचालन का आयोजन किया गया जिसमें 1 माओवादी एवं 2 विद्रोहियों को पकड़ा गया। केरिपुबल ने दिनांक 01/02/2015 से 31/08/2015 तक 10 उग्रवादियों/नक्सलियों को मार गिराया और 331 उग्रवादियों एवं नक्सलियों को गिरफ्तार किया। 101 हथियार, 1722 गोलियाँ, 266 कि.ग्रा. विस्फोटक, 20 ग्रेनेड, 126 बम, 381 आईईडी, 282 डेटोनेटर, 1089 जिलेटिन छड़ एवं 10,22,330/—रु. बरामद किया गया। यह एक उत्कृष्ट उपलब्धि है।

संभरण शाखा

- 1 अनुपयोगी घोषित किए गए 261 वाहनों के एवज में 261 नए वाहनों की खरीददारी की अनुमति महानिदेशक, के.रि.पु.बल से प्राप्त करके दिनांक 29/07/2015 को सप्लाई आदेश संबंधित फर्म को प्रेषित किया गया है।
- 2 17 मारुति सुजुकी स्विफ्ट डिजायर की कय स्वीकृति आदेश गृह मंत्रालय से प्राप्त करके दिनांक 30/07/2015 को सप्लाई आदेश संबंधित फर्म को प्रेषित किया गया है।
- 3 अनुपयोगी घोषित किए गए 27 लाईट बुलेट प्रूफ वाहनों के एवज में 27 नए लाईट बुलेट प्रूफ वाहनों की प्रोविजनिंग स्वीकृति गृह मंत्रालय से दिनांक 22/07/2015 को प्राप्त हुई है।

प्रशिक्षण शाखा

1. 11,745 सि./रिक्रुट प्रशिक्षण केन्द्रों में बेसिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।
2. 93 सीधे भर्ती अधिकारी केरिपुबल कादरपुर अकाडेमी से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।
3. 2,988 कर्मिको को पदोन्नत एवं अन्य पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण दिलाया गया।
4. 112 कर्मिको को टीओटी एवं 456 कर्मिको को सीआईएटी कोर्स का प्रशिक्षण दिलाया गया।

कल्याण शाखा

1. मृत्यु के 6 मामले में 60 लाख अनुग्रह राशि स्वीकृत की गयी।
2. जोखिम निधि भत्ता मृत्यु के मामले में रु. 4,32,85,000/—, अशक्तता के मामले में रु. 20,60,000/— सेवानिवृत्ति के मामले में रु. 1,10,14,512/— स्वीकृत किए गए।

भर्ती शाखा

1. 3,021 सि./ (टेक्नीकल/ट्रेड्स) की रिक्तियों को भरने के लिए भर्ती प्रक्रिया के बाद चिकित्सा प्रक्रिया पूरी की जा रही है।
2. 24588 सि./जीडी के रिक्त पदों को भरने के लिए गृह मंत्रालय को सूचित किया गया है।
3. नियुक्ति के लिए 69 हव./मं0 का चुनाव किया गया है।



विदाई



श्री दुर्गा प्रसाद, विशेष महानिदेशक, श्री ओम प्रकाश, संयुक्त सहायक निदेशक को उनके विदाई समारोह के अवसर पर स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।



श्री दुर्गा प्रसाद, विशेष महानिदेशक, श्री गोबिन्द प्रसाद, सहायक कमाण्डेंट (मित्रा) को उनके विदाई समारोह के अवसर पर स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।



श्री पी.वी.के. रेड्डी, अपर महानिदेशक, श्री विजय कुमार, संयुक्त सहायक निदेशक, वेतन एवं लेखा कार्यालय, नई दिल्ली को उनकी विदाई समारोह के दौरान स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए।



श्री पी.वी.के. रेड्डी, अपर महानिदेशक, श्री के.के. रमेश, संयुक्त सहायक निदेशक, महानिदेशालय, नई दिल्ली को उनकी विदाई समारोह के दौरान स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए।

प्रतिनियुक्ति से वापसी



श्री बी.एन. रमेश भा. पु. से (पश्चिम बंगाल काडर-1988) महानिरीक्षक/निदेशक कादरपुर अकाडेमी दिनांक 18/08/2015 को केरिपुबल से अपने गृह काडर पश्चिम बंगाल में चले गए।

स्थानान्तरण



श्री एम.पी.एस. नेगी महानिरीक्षक (परि) जोराहाट से केरिपुबल अकादमी, कादरपुर



श्री सतपाल कपूर महानिरीक्षक (संभरण), महानिदेशालय से महानिरीक्षक (परि), जोराहाट



श्री आर.के. मिश्रा, भा.पु.से. महानिरीक्षक झारखण्ड (टी.ए.सी. लातेहर) से महानिरीक्षक (संभरण), महानिदेशालय



76वें स्थापना दिवस के अवसर पर श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार एवं श्री शिवराज सिंह चौहान, माननीय मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश सरकार, परेड दल के कमांडरों से हाथ मिलाते हुए।



76वें स्थापना दिवस के अवसर पर श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार 210 कोबरा के कमाण्डेंट को सर्वोत्तम कोबरा बटालियन की ट्रॉफी प्रदान करते हुए।

76वें स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने सरदार पोस्ट युद्ध के हीरो रहे भूपू. उप निरी. जीडी. भवानी दत्त शर्मा को सम्मानित करते हुए।

